Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ۭ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ

(सूरत ईनाम : 69)

अनुवाद : और जब तू देखे उन लोगों को जो हमारी आयात से उपहास करते हैं तो फिर उनसे अलग हो जा यहां तक कि वे किसी दूसरी बात में व्यस्त हो जाएं। और अगर कभी शैतान तुझसे इस विषय में भूल चूक करवा दे तो यह याद आ जाने पर ज़ालिम क़ौम के साथ न बैठ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 29

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

21 ज़ुल्हज्जा 1443 हिज्री कमरी, 21 वफ़ा 1401 हिज्री शम्सी, 21 जुलाई 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

घर की ख़ुराक और पति की कमाई में से यदि महिला अल्लाह की राह में ख़र्च करे

(2065) हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब औरत अपने घर की ख़ुराक में से अल्लाह की राह में ऐसे तौर पर कुछ ख़र्च करे कि बिगाड़ की नीयत न हो, तो उसे उसका अज्र मिलेगा, इस वजह से कि उस ने ख़र्च किया और उसके पति को भी, इस लिए कि उस ने कमाया और ख़ज़ानची को भी वैसा ही। वे एक दूसरे के अज्र को कम नहीं करेंगे।

(2066) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब औरत अपने पति की कमाई से बग़ैर उसकी इजाज़त के ख़र्च करे तो उस (मर्द) को भी इस का आधा अज्र मिलेगा।

(सही बुख़ारी,भाग 4 किताब बियू, मुद्रित 2008 क़ादियान)

★ ★ ★

मुत्तक़ियों के वास्ते बड़े-बड़े वादे हैं और इससे बढ़ कर क्या होगा कि अल्लाह तआला मुत्तक़ियों का मित्र होता है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

अब इसके बाद फिर मैं असल मतलब की तरफ़ आता हूँ और बताता हूँ कि मुत्तक़ी कौन होते हैं? वास्तव में मुत्तक़ियों के वास्ते बड़े बड़े वादे हैं और इस से बढ़कर क्या होगा कि अल्लाह तआला मुत्तक़ियों का मित्र होता है। झूठे हैं वे जो कहते हैं कि हम ख़ुदा के प्रिय हैं और फिर मुत्तक़ी नहीं हैं बल्कि झूठी ज़िंदगी व्यतीत करते हैं। और एक ज़ुलम और ग़ज़ब करते हैं जबकि वे विलायत और क़ुर्ब-ए-इलाही के दर्जा को अपने साथ मंसूब करते हैं, क्योंकि अल्लाह तआला ने इस के साथ मुत्तक़ी होने की शर्त लगा दी है।

फिर एक और शर्त लगाता है या यह कहो, मुत्तक़ियों का एक निशान बताता है اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ख़ुदा उनके साथ होताहै अर्थात उनकी सहायता करता है जो मुत्तक़ी होते हैं। अल्लाह तआला के साथ होने का सबूत उस की नुसरत ही से मिलता है। पहला दरवाज़ा विलायत का वैसे बंद हुआ। अब दूसरा दरवाज़ा मित्रताऔर नुसरत इलाही का इस तरह पर बंद हुआ। याद रखो अल्लाह तआला की नुसरत कभी भी नापाकों और फ़ासिक़ों को नहीं मिल सकती। इस का इन्हिसार तक़्वा ही पर है। ख़ुदा की मदद मुत्तक़ी ही के लिए है।

फिर एक और राह है कि इन्सान मुश्किलात और मसायब में ग्रस्त होताहै और अलग अलग ज़रूरतें रखता है। उन के हल और निवारण के लिए भी तक़्वा ही को उसूल क़रार दिया है। जीवन व्यतीत करने की वस्तुओं की तंगी और दूसरी तंगियों से राह-ए-निजात तक़्वा ही है। फ़रमाया। وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ (अल् तलाक़ : 3-4) मुत्तक़ी के लिए हर मुश्किल में एक मख़रज पैदा कर देता है और इस को ग़ैब से इस से मख़लिसी पाने के अस्बाब पहुंचा देता है। उस को ऐसे तौर से रिज़्क़ देता है कि उस को पता भी न लगे।

(मल्-फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 379 मुद्रित 2018 क़ादियान)

★ ★ ★

नबुव्वत के बग़ैर कभी भी दुनिया अपने हुक़ूक़ को बरक़रार नहीं रख सकती, यह नेअमत जब तक दुनिया को बार-बार न मिले इन्सान का क़दम तरक़्क़ी की तरफ़ नहीं बढ़ सकता

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत नहल आयत : 72

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَاۗدِّيْ رِزْقِهِمْ عَلٰي مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَاۗءٌ ۭ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

जो लोग मुल्कों और हुकूमतों की ताकतों पर क़ाबिज़ हो जाते हैं उनका बड़ा बहाना यही होता है कि दुनिया का इंतेज़ाम लायक़ आदमियों के हाथ में रहना चाहिए और वे कुछ ख़ानदानों और घरानों को लियाक़त के लिए विशेष कर लेते हैंऔर बादशाहतें क़ायम हो जाती हैं। कुछ ख़ानदान हुकूमत करने के योग्य क़रार दे दिए जाते हैं और लोगों से न कोई राय लेता है न उनके इंतेज़ाम में कोई दख़ल होता है। इस के इलावा कुछ हुक़ूक़ इन्सानों के मज़हबी लीडर, पीर और पुरोहित छीन लेते हैं। दीन को पंडितों, मौलवियों और पादरियों की जायदाद क़रार दे लिया जाता है। न प्रजा को दीन से वाक़िफ़ रखा जाता है न उन्हें उसके विषय में दिलचस्पी लेने का अवसर दिया जाता है। अतः यह ख़्याल कर लिया जाता है कि उनका काम केवल मज़हबी पेशवाओं के बताए हुए मसायल को मानना है। मज़हबी किताबों पर ख़ुद ग़ौर करना और उनसे फ़ायदा उठाना उनका काम नहीं।

उद्देश्य जब क़ौम नबुव्वत के ज़माना से दूर हो जाती है उसके हुक़ूक़ कुछ ख़ानदानों के क़बज़ा में बतौर विरासत के चले जाते हैं और आम लोग दीन और दुनिया के विषय में भी मश्वरा देने या राय देने के काबिल नहीं समझे जाते और इस अंतर और भेदभाव को एक फ़र्ज़ी योग्यता का नतीजा क़रार दिया जाता है। एक बादशाह का बेवकूफ़ बेटा दुनिया का सबसे बड़ा समझदार समझा जाता है वह नादान ख़ुद ऐसा घमंडी होता है कि जब दुनिया के सामने अपना कोई अहमक़ाना ऐलान करता है तो उस में इस किस्म के अनूचित शब्द प्रयोग करता है कि बादशाह ने लोगों के फ़ायदा के लिए अमुक उच्च उपाय सोचा है जिसका इज़हार इस ऐलान के ज़रीया से किया जाता है और कभी वह इस किस्म का ऐलान करता है कि दुनिया वालों की यह ख़ुश क़िसमती है कि बादशाह अमुक बात में उस के शरीक हैं और जिस क़दर वह बेवक़ूफ़ होता है उसी क़दर ज़्यादा शेखी करता है।

यही हाल मज़हबी दुनिया का होता है। उल्मा के बेटे थोड़ा सा ज्ञान रखते हुए और ग़ौर ध्यान की ताक़तों से वंचित होते हुए केवल इस लिए मशायख़ में से कहलाते हैं कि वह उल्मा की औलाद हैं और दुनिया से मांग करते हैं कि बिना दलील के उनकी जाहिलाना बातों को स्वीकार किया जाएँ और जो उनके सामने ख़ुदा तआला का कलाम रखे उसे इन व्यर्थ की कहानियों और बे-इमानी रिवायतों का जिनकी सनद उनके पास कोई नहीं होती, इंकार करने वाला क़रार देकर काफिरो

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया हे अबू ख़ेसमा क्या ख़बर है? उन्होंने अर्ज़ किया कि हे रसूल के ख़लीफ़ा अच्छी ख़बर है। अल्लाह ने हमें यमामा पर फ़तह अता फ़रमाई है। रावी कहते हैं कि हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने सजदा किया

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

जंग-ए-यमामा के हालात और वाक़ियात का तफ़सीली वर्णन

मुसैलमा कज़्ज़ाब के क़तल की घटना का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 10 जून 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

यमामा की जंग के बारे में वर्णन चल रहा था। इस बारे में मज़ीद यूं वर्णन हुआ है। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि मैं ने अबाद बिन बिशर को कहते हुए सुना कि हे अबू सईद जब हम बुज़ाखा से फ़ारिग़ हुए तो इस रात मैंने स्वप्न में देखा कि मानो आसमान खोला गया है फिर मुझ पर बंद कर दिया गया है। इस से मुराद शहादत है। अबू सईद कहते हैं मैंने कहा इं शा अल्लाह जो भी होगा बेहतर होगा। वह कहते हैं कि यमामा के रोज़ मैं आपको देख रहा था और आप अंसार को पुकार रहे थे और कह रहे थे कि हमारी तरफ़ आओ। इस पर चार-सौ आदमी वापस आए। बरा बिन मालिक और अबू दुजाना और अब्बाद बिन बशर उनमें आगे आगे थे यहां तक कि वह सब बाग़ के दरवाज़े पर पहुंच गए। मैंने अब्बाद बिन बशर की शहादत के बाद उन्हें देखा कि आपके चेहरे पर बहुत ज़्यादा तलवार के निशान थे मैंने आपको आपके जिस्म पर मौजूद एक अलामत से पहचाना।

फिर हज़रत उम्मे अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन आता है। उम्मे अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु जो तारीख-ए-इस्लाम की बहुत बहादुर महिलाओं में से एक सहाबिया थीं उनका नाम नुस्यबा पुत्री काबा था। यह ग़ज़व-ए-अहद में भी शरीक हुईं और निहायत बहादुरी से लड़ी। जब तक मुस्लमान विजय थे वह मश्क में पानी भर-भर कर लोगों को पिला रही थीं लेकिन जब पराजय हुई तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुँचीं और सेना-सिपर हो गईं। कुफ़्फ़ार जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ बढ़ते तो यह तीर और तलवार से रोकती थीं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बाद में ख़ुद फ़रमाया कि मैं अहद में उनको अपने दाएं और बाएं बराबर लड़ते हुए देखता था। इब्ने कमिया जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंच गया तो उम्मे अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसको बढ़कर रोका। इसलिए उसके वार से हज़रत उम्मे अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु के कंधे पर गहरा ज़ख़्म आया। उन्होंने भी तलवार मारी लेकिन वह दोहरी ज़िरह पहने हुए था इसलिए कारगर नहीं हुआ। बहरहाल यह उम्मे अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु का तारीख़ी मुक़ाम है यह वर्णन करती हैं कि उनके बेटे अब्दुल्लाह ने मुसैलमा कज़्ज़ाब को क़तल किया। हज़रत उम्मे अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हा उस रोज़ स्वयं भी यमामा की जंग में शामिल थीं और इस में उनका एक बाज़ू कट गया था। हज़रत उम्मे अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु के इस जंग में शामिल होने की वजह यह वर्णन हुई है कि उनके बेटे हबीब बिन ज़ैद जो हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ अमान में थे जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई यह अमान में थे और यह ख़बर अम्र तक पहुंची तो वह अमान से लौटे। रास्ते में मुसैलमा से उनका सामना हुआ। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो आगे निकल गए। हबीब बिन ज़ैद और अब्दुल्लाह बिन वह्ब पीछे थे इन दोनों को मुसैलमा ने पकड़ लिया और कहा क्या तुम गवाही देते हो कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ? अब्दुल्लाह बिन वह्ब ने कहा हाँ। मुसैलमा ने उनको लोहे की ज़ंजीरों में क़ैद करने का हुक्म दिया। उनको यक़ीन नहीं आया, ख़्याल था कि शायद जान बचाने के लिए कह रहे हैं। बहरहाल फिर हबीब बिन ज़ैद से कहा कि क्या तुम गवाही देते हो कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ? उन्होंने जवाब दिया कि मैं सुनता नहीं। उसने फिर कहा क्या तुम गवाही देते हो कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं? आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा हाँ। मुसैलमा ने उनके बारे में हुक्म दिया तो उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए और जब भी उनसे वह कहता कि क्या तुम गवाही देते हो कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ तो वह कहते कि मैं सुन नहीं सकता। और जब वह यह कहता कि क्या तुम गवाही देते हो कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हाँ। यहां तक कि उसने आप रज़ियल्लाहु अन्हु का एक एक उज़ू काट डाला। आप रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ कंधे के जोड़ से काटे गए। आप रज़ियल्लाहु अन्हु की टांगें घुटनों से ऊपर तक काट दीं फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु को आग में जला दिया। इस सारे वाक़िया के दौरान न तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी बात से पीछे हटे और न मुसैलमा अपनी बात से पीछे हटा यहां तक कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु आग में शहीद हो गए।

एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ हज़रत हबीब रज़ियल्लाहु अन्हु मुसैलमा के पास जब ख़त लेकर गए तो उस वक़्त उसने हज़रत हबीब रज़ियल्लाहु अन्हु का इस तरह एक-एक उज़ू काट के शहीद किया और फिर आग में जला दिया। जब हज़रत उम्मे अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने बेटे की शहादत की ख़बर मिली तो उन्होंने क़सम खाई कि वह ख़ुद मुसैलमा कज़्ज़ाब का सामना करेंगी और या उस को मार डालेंगी या ख़ुद ख़ुदा की राह में शहीद हो जाएँगी।

जब हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने यमामा के लिए लश्कर तैयार किया तो उम्मे अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और जंग में शमूलियत के लिए आप रज़ियल्लाहु अन्हु से इजाज़त तलब की। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि आप जैसी महिला के जंग के लिए निकलने में कोई चीज़ रोक नहीं हो सकती। अल्लाह का नाम लेकर निकलें। इस जंग में उनका एक और बेटा अब्दुल्लाह भी शरीक था। वह बयान करती हैं कि जब हम यमामा पहुंचे तो शदीद जंग हुई। अंसार ने मदद के लिए पुकारा और मुस्लमान मदद के लिए पहुंचे। जब हम बाग़ के सामने पहुंचे तो बाग़ के दरवाज़े पर अज़दहाम हो गया और हमारे दुश्मन बाग़ में एक तरफ़ थे और इस जानिब थे जिस तरफ़ मुसैलमा था। हम इस में ज़बरदस्ती घुस गए और कुछ देर तक हमने उनसे जंग की। अल्लाह की क़सम मैं ने उनसे ज़्यादा अपना बचाओ करने वाला नहीं देखा और मैं ने ख़ुदा के दुश्मन मुसैलमा का क़सद किया कि उसे पाऊं और देखूं। मैं ने अल्लाह से अह्द किया था कि अगर मैं ने उसे देख लिया तो मैं उस को छोड़ूँगी नहीं। इस को मारूंगी या ख़ुद मर जाऊँगी। लोग आपस में हमला-आवर हुए उनकी तलवारें आपस में टकराने लगीं गोया कि वे बहरे हो गए और सिवाए तलवार की मार के आवाज़ के और कोई आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। यहां तक कि मैं ने अल्लाह के दुश्मन को देखा। मैं ने उस पर हमला कर दिया। एक शख़्स मेरे सामने आया उसने मेरे हाथ पर मार लगाई और उसे काट दिया। अल्लाह की क़सम मैं डगमगाई नहीं ताकि मैं उस ख़बीस तक पहुंच जाऊं और वह ज़मीन पर पड़ा था और मैं ने अपने बेटे अब्दुल्लाह को वहां पाया उसने उसे मार दिया था। एक रिवायत में यह भी है कि :

हज़रत उम्मे अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करती हैं कि मेरा बेटा अपने कपड़े से अपनी तलवार को साफ़ कर रहा था मैं ने पूछा क्या तुमने मुसैलमा को क़तल किया है?उसने कहा हाँ हे मेरी माता।

मैं ने अल्लाह के सामने सजदा शुक्र किया हज़रत उम्मे अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि अल्लाह ने दुश्मनों की जड़ काट दी। जब जंग ख़त्म हो गई और मैं अपने घर वापस लोटी तो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु एक अरब तबीब को मेरे पास लेकर आए। उसने उबलते हुए तेल के साथ मेरा ईलाज किया। अल्लाह की क़सम यह ईलाज मेरे लिए हाथ कटने से ज़्यादा कष्टदायक था। हज़रत

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

चूँकि नबी ख़ुदा तआला का नाम सुन कर अदब की रूह से भर जाता है और उसकी महानता का मतवाला होता है इसलिए अपनी नव विवाहित पत्नी के एक वाक्य पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तुरंत फ़रमाया कि तू ने एक बड़ी हस्ती का वास्ता दिया है और उसकी पनाह मांगी है जो बड़ा पनाह देने वाला है इसलिए मैं तेरा निवेदन को क़बूल करता हूँ इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसी वक़्त बाहर तशरीफ़ ले आए और फ़रमाया कि हे अबू उसैद उसे दो चादरें दे दो और इस को इसके घरवालों के पास पहुंचा दो

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के बाबरकत समय में बाग़ी मुर्तद होने वालों के ख़िलाफ़ होने वाली मुहिम्मात का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 17 जून 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुतबा में मैंने वर्णन किया था कि मुर्तद होने वालों या मुनाफ़ेक़ीन का क़िस्सा ख़त्म हुआ जो यमामा के विषय में था और मुसी कज़्ज़ाब और इसके साथियों का जो क़िस्सा था वह पिछले ख़ुतबा में ख़त्म हुआ था।

मुर्तद होने वालों जिन्हों ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में हथियार उठाए उनका अभी वर्णन चल रहा है।

जैसा कि मैंने पहले वर्णन किया था कि कई मुहिम्मात थीं। पहली मुहिम जो काफ़ी लंबी थी वह तो बयान हुई, जो अन्य दस मुहिम्मात हैं उनमें से दो और तीन के वर्णन में यह आता है कि हज़रत हुज़ेफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अर्फ़ज के द्वारा से यह मुहिम विजय की गई जो अमान के मुर्तद बागियों के ख़िलाफ़ मुहिम थी। अमान बहरीन के क़रीब यमन का एक शहर है। जो ख़लीज-ए-फारस और बहीरा अरब के दमध्य स्थित है जिसमें इन दिनों आज के मुत्तहेदा अरब इमारात के पूर्वी इलाक़े भी शामिल थे। यहां बुतपरस्त क़बीला अज़ और अन्य क़बायल आबाद थे जो मजूसी थे। मस्क़त, सुहारवर, दबा यहां के साहिली शहर थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र समय में अमान ईरानियों की अमल-दारी में शामिल था और उनकी तरफ़ से जो शख़्स आमिल निर्धरित था। उस इलाक़े में मजूसी मज़हब फैला हुआ था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने 8 हिज्री में हज़रत अबू ज़ैद अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु को तब्लीग़-ए-इस्लाम की ग़रज़ से और हज़रत उमर बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो को यहां के दो रईस भाईयों जाफर बिन जुलुन्दी और अब्बाद बिन जुलुनदी के नाम ख़त देकर भेजा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़त का मज़मून यह था : बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। यह ख़त मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के बंदे और उसके रसूल की तरफ़ से जो जयफर और अब्बाद पिसरान जुलुन्दी की तरफ़ है। सलामती हो उस पर जिसने हिदायत की पैरवी की। मैं तुम्हें इस्लाम लाने की दावत देता हूँ। तुम इस्लाम क़बूल कर लो, सुरक्षित रहोगे। मैं अल्लाह का रसूल हूँ और सारी दुनिया की तरफ़ भेजा गया हूँ ताकि हर उस शख़्स को डराऊं जो ज़िंदा है और काफ़िरों पर समझाने के अंतिम प्रयास के पूर्ण होने तक प्रयास करूँ। अगर तुम इस्लाम ले आओगे तो मैं तुम्हें बदस्तूर वहां का हाकिम रहने दूँगा और अगर इस्लाम क़बूल करने से इंकार करोगे तो तुम्हारी रियासत तुमसे छिन जाएगी।

(सीरत हज़रत उमर बिन अल् आस पृष्ठ 49 लेखक डाक्टर हुस्न इबराहीम हसन, उर्दू अनुवाद शेख़ मुहम्मद अहमद पानीपति)

(फतूहुल बुल्दान पृष्ठ 103-104 मो अस्सा मारूफ़ बेरूत 1987 ई.)

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 209 ज़व्वार अकैडमी पब्ली केशन्ज़् कराची 2003 ई.)

(एटलस सीरत नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पृष्ठ 68 मुद्रित दरुस सलाम रियाज़ 1424 ह)

कुछ रिवायात के मुताबिक़ काफ़ी दिन की बेहस के बाद इन भाईयों ने इस्लाम क़बूल किया और एक रिवायत के मुताबिक़ अमान के हाकिम जी मुझे इस्लाम लाने में तो कोई उज़्र नहीं लेकिन यह डर है कि अगर मैं ने यहां से ज़कात इकट्ठी कर के मदीना भेजी तो मेरी क़ौम मुझसे बिगड़ जाएगी। इस पर हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस को पेशकश की कि इस इलाक़े से ज़कात का जो माल वसूल होगा वह इसी इलाक़े के गरीबों पर ख़र्च कर दिया जाएगा। इसलिए उसने इस्लाम क़बूल कर लिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु यहां दो साल तक मुक़ीम रहे और लोगों को तब्लीग़-ए-इस्लाम करते रहे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु की इस कामयाब तब्लीग़ी मसाई से इस इलाक़े के अक्सर लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई और अरब के चारों तरफ़ इर्तिदाद और बग़ावत फैल गई तो हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो को अमान से मदीना तलब फ़र्मा लिया। दूसरी तरफ़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद लक़ीत बिन मालिक आज़दी उनमे उठा जिसका उपनाम ज़ू ताज था और यह दौर-ए-जाहिलियत में शाह अमान जुलुनदी के हमपल्ला समझा जाता था। जुलुनदी अमान के बादशाहों का उपनाम था। बहरहाल उसने नबुव्वत का दावा कर दिया और अमान के जाहिलों ने इस की पैरवी की, यह अमान पर क़ाबिज़ हो गया और जी उसके भाई अबअद को पहाड़ों में पनाह लेनी पड़ी और जो अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को इस सारी सूरत-ए-हाल से बाख़बर किया और मदद तलब की। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके पास दो अमीर भेजे, एक हुज़ैफ़ा बिन मेहसन गुल्फ़ानी अमान की तरफ़ और दूसरे अर्फ़जा बिन हर्समा बारिकी असदी रज़ियल्लाहु अन्हु को महरा की तरफ़ और हुक्म दिया कि वे दोनों साथ साथ सफ़र करें और जंग का आग़ाज़ अमान से करें। महरा यमन के एक क़बीले का नाम था और हुक्म दिया कि जब अमान में जंग हो तो हुज़ेफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु क़ायद होंगे और जब महरा में जंग हो तो हुज़ेफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु सेनापतित्य के फ़रायज़ सरअंजाम देंगे।

हज़रत हुज़ेफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अर्फ़जा का परिचय यह है। तारीख-ए-तिब्री में हज़रत हुज़ेफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम हुज़ेफ़ा बिन महकम गिल्मानी हुआ है जबकि सहाबा के हालात पर मुश्तमिल किताब में उनका नाम हुज़ैफ़ा कलआनी बयान हुआ है। आप हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात तक अमान के वाली रहे।

सहाबा के हालात पर मुश्तमिल कुतुब में हज़रत अर्फ़जा रज़ियल्लाहु अन्हो का पूर्ण नाम अर्फ़जा बिन ख़ुज़यमह रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन हुआ है। अल्लामा इब्ने असीर के नज़दीक उनके पिता का नाम हरसमा था। यह दुश्मन के ख़िलाफ़ जंगी चालों के लिए मशहूर थे।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन दोनों की मदद के लिए हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हो बिन अबु जहल को रवाना किया। इस से पहले यमामा की जंग की तफ़सीलात में मुसैलमा कज़्ज़ाब के वर्णन में यह वर्णन हो चुका है कि जब हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अकरम को उपद्रव फैलाने वाले और बग़ावत का मुक़ाबला करने के लिए भेजा और शरहबील बिन हसना को उनकी मदद के लिए रवाना किया तो इक हुक्म दिया था कि वह शरहबील के आने से पहले हमला नहीं करेंगे लेकिन उन्होंने उस का इंतिज़ार किए बग़ैर हमला कर दिया जिसके नतीजा में उन्हें शिकस्त खानी पड़ी जिस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु उनसे नाराज़ हुए और उन्हें अमान की तरफ़ जाने का हुक्म दिया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के हुक्म के मुताबिक़ अकरमा अपनी फ़ौज के साथ अमान की तरफ़ अर्फ़जा रज़ियल्लाहु अन्हो और हुज़ेफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हो के पीछे पीछे रवाना हुए और पूर्व उसके कि वे दोनों अमान पहुंचते अकरमा अमान के क़रीब एक स्थान रजाम में इन दोनों से जा मिले और उन्होंने जेफ़र और उसके भाई अब्बाद के पास अपना पैग़ाम

भेज दिया। तारीख़ की कुछ पुस्तकों जैसे कामिल इब्ने असीर में इस का नाम इयाज़ वर्णन किया जाता है। रिजाम अमान में एक तवील पहाड़ी सिलसिला है।

बहरहाल मुस्लमान लश्कर के सरदारों के पैग़ाम मिलने के बाद जेफ़र और अब्बाद अपनी अपनी क़ियाम गाहों से निकले जो पहले छिप गए थे। उस मुर्तद के नबी के ऐलान होने के बाद जिसने अपनी फ़ौज बना ली थी उस की ताक़त ज़्यादा हो गई थी तो बहरहाल यह अपनी क़ियाम गाहों से निकले और उन्होंने सुहार में आकर पड़ाव किया और हुज़ेफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हो, अर्फजा रज़ियल्लाहु अन्हो और अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हो को कहला भेजा कि आप सब हमारे पास आ जाएं। सोहार भी अमान में पहाड़ों से जुड़ा एक क़स्बा है। इस के बारे में आता है कि अमान का एक बाज़ार जो रजब के शुरू में पाँच रातों तक यहां लगता था। इसलिए

मुस्लमानों का लश्कर सुहार में जमा हो गया और मतसला इलाक़ों को मुर्तद होने वालों से पवित्र कर दिया।

उधर लक़ीत बिन मालिक को इस्लामी लश्कर के पहुंचने की ख़बर मिली तो वह अपनी फ़ौज लेकर मुक़ाबले के लिए निकला और दबा के मुक़ाम पर रुका। उसने औरतों बच्चों और सामान और आहार को अपने पीछे रखा ताकि इस से जंग में ताकत मिले। दबा भी इस इलाक़े का शहर था और तिजारती मंडी थी। मुस्लमान उमरा ने लक़ीत के साथी सरदारों को पत्र लिखे और इस का आरम्भ उन्होंने क़बीला बनू जदीद के रईस से किया। उनके जवाब में उन सरदारों ने भी मुस्लमान उमरा को पत्र लिखे। इस मुरासलत का नतीजा यह हुआ कि ये सब सरदार लक़ीत से अलैहदा हो गए।

(ओसोदुल गाबा, भाग 4 पृष्ठ 21-22 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2008 ई.)

(अल् मुफ़स्सल फ़ील तारीख़ अरब क़बला इस्लाम, फ़सलुल सादिस वर्राबेऊन, भाग 4 पृष्ठ 329 मकतबा जरीर 2006 ई.)

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 291-292 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012ई.)

(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ शख़्सियत और कारनामे अज़ सलाबी पृष्ठ 338 अल् फुरकान ट्रस्ट ख़ानगढ़)

(मोअज्जमुल बुल्दान भाग 5 पृष्ठ 270 भाग 3 पृष्ठ 31 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत) (फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 170 ज़व्वार अकैडमी कराची)

और मुस्लमानों के साथ आ मिले। इसी जगह यानी दबा के स्थान पर लक़ीत की फ़ौज के साथ फिर घमसान की जंग हुई।

इबतेदा में लक़ीत का पल्ला भारी रहा और क़रीब था कि मुस्लमानों को शिकस्त हो जाती लेकिन अल्लाह तआला ने अपने लुतफ़-ओ-करम से एहसान फ़रमाया और इस नाज़ुक घड़ी में मदद नाज़िल फ़रमाई। बहरीन के मुख़्तलिफ़ क़बायल और बनू अब्दिल कैस की की तरफ़ से भारी सहायता पहुंच गई जिससे उनकी क़ुव्वत और ताक़त में इज़ाफ़ा हो गया और उन्होंने आगे बढ़कर लक़ीत की फ़ौज पर शदीद हमला कर दिया जिससे लक़ीत की फ़ौज के पांव उखड़ गए और वे भाग खड़े हुए। मुस्लमानों ने उनका पीछा किया और दस हज़ार मुक़ातेलीन को तलवार के वार के नीचे किया और बच्चों और औरतों को क़ैद कर लिया। माल-ओ-बाज़ार पर क़बज़ा कर लिया और इस का पांचवा अरफजा रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में रवाना कर दिया। इस तरह अमान में भी इस फ़ित्ना का ख़ातमा हो गया और मुस्लमानों की हुकूमत पायदार बुनियादों पर क़ायम हो गई। जंग के बाद हुज़ेफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अमान ही में सुकूनत अख़्तेयार कर ली और यहां के हालात की दुरुस्ती और अमन-ओ-अमान क़ायम करने में व्यस्त हो गए। अरफजा रज़ियल्लाहु अन्हो तो जैसा कि वर्णन हुआ माल-ए-ग़नीमत लेकर मदीना चले गए और हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हो अपने लश्कर लेकर महरा की बग़ावत का हल करने के लिए रवाना हो गए।

(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत और कारनामे अज़ डाक्टर अली मोहम्मद सलाबी अनुवादक पृष्ठ 338-339 मकतबा अल् फुरकान मुज़फ़्फ़रगढ़ पाकिस्तान)

(हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु मोहम्मद हसीन हैकल अनुवादक शेख़ अहमद पानीपती, पृष्ठ 244-245)

हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हो की मुर्तद बाग़ीयों के ख़िलाफ़ मुहिम्मात के बारे में आता है कि हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक झंडा हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हो को दिया था और उनको मुसैलमा के मुक़ाबला का हुक्म दिया था।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 257 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हो को मुसैलमा के मुक़ाबले के लिए यमामा की तरफ़ रवाना किया और उनके पीछे हज़रत शुरहबील बिन हसना रज़ियल्लाहु अन्हो को भी यमामा भेजा था। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन दोनों के लिए यमामा का नाम लिया जबकि अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया कि जब तक शुरहबील पहुंच जाएं हमला नहीं करना लेकिन अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हो ने जल्दी की जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है और शुरहबील के आने से पहले आगे बढ़कर हमला कर दिया और मुसैलमा ने उनको पीछे धकेल दिया। शिकस्त खा कर वह पीछे हट गए। हज़रत शुरहबील बिन हसना को जब वाक़िया की सूचना मिली तो वह जहां थे वहीं ठहर गए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने शुरहबील को लिखा कि तुम यमामा के क़रीब ही मुक़ीम रहो यहां तक कि तुम्हें मेरा दूसरा आदेश प्राप्त हो।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 291मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हो को यह लिखा कि मैं अब तुम्हारी शक्ल नहीं देखूँगा, पहले भी वर्णन हो चुका है, और न ही तुम्हारी कोई बात सुनूँगा परन्तु बाद उस के कि तुम कोई कारहाए नुमायां सरअंजाम दो। कोई ग़ैरमामूली काम कर के दिखाओ फिर ठीक है, फिर मेरे पास आना। फिर आपने फ़रमाया कि तुम अमान जाओ और अहल-ए-अमान से लड़ो और हुज़ेफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु और अरफजा रज़ियल्लाहु अन्हु की मदद करो।

बहरहाल अमान जैसा कि बयान हो चुका है कि ख़लीज-ए-फारिस का हिस्सा था जिसमें इन दिनों आज के एकसाथ अरब इमारात के पूर्वी क्षेत्र भी शामिल थे। यहां बुतों की पूजा करने वाला क़बीला अज़्द और अन्य क़बायल आबाद थे जो मजूसी थे। मस्क़त, सुहा और दबा यहां के साहिली शहर थे। आपने यह भी फ़रमाया कि तुम में हर एक शख़्स अपने घुड़सवारों का सरदार रहेगा जबकि जब तक तुम लोग हुज़ेफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़ेरे निगरानी इलाक़े में रहोगे वह तुम सब के अमीर होंगे। जब तुम लोग फ़ारिग़ हो जाओ तो फिर मह चले जाना, फिर वहां से यमन चले जाना यहां तक कि यमन और हुज़ैफ़ा की कार्यवाईयों में मुहाजिर बिन अबू उमय्या के साथ रहना और अमान और यमन के दरमयान जिन लोगों ने इर्तिदाद इख़्तियार किया है उनकी सरकूबी करना और मुझे जंग में तुम्हारे कारहाए नुमायां की ख़बर पहुँचते रहे।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 291मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

(एटलस सीरत नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पृष्ठ 68 मुद्रित दरुस सलाम रियाज़ 1424 ह)

यह हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने इरशाद फ़रमाया। बहरहाल अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु की रवानगी से क़बल हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की हिदायत के मुताबिक़ हुज़ैफ़ा बिन मिहसल गिल्फानी रज़ियल्लाहु अन्हु अमान और अरफजा बारकी रज़ियल्लाहु अन्हो बारकी रज़ियल्लाहु अन्हु मेहरा के मुर्तद होने वालों से लड़ने के लिए रवाना हो चुके थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के हुक्म के मुताबिक़ अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी फ़ौज के साथ अरफजा रज़ियल्लाहु अन्हो और हुज़ेफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के पीछे पीछे रवाना हुए और पूर्व इस के कि वे दोनों अमान पहुंचते अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु से जा मिले। इस से क़बल हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन दोनों को यह ताकीदी हुक्म दे दिया था कि अमान से फ़ारिग़ होने के बाद वे अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु की राय पर अमल करें चाहे वे उनको अपने साथ ले लें या अमान में ठहरने का हुक्म दें। बहरहाल फिर जैसा कि वर्णन हो चुका है जब ये तीनों अमीर अमान के क़रीब एक मुक़ाम रजाम में आपस में जा मिले तो उन्होंने जयफर और अब्बाद के पास अपने पयाम्बर भेजे और दूसरी तरफ़ जब लक़ीत को उनकी फ़ौज के आने की ख़बर हुई तो उसने अपनी जमाअतों को इकट्ठा किया और दबा में आकर पड़ाव डाला। जेफ़र और अब्बाद भी अपनी अपनी क़ियाम गाहों से निकले। उन्होंने सुहार में आकर पड़ाव किया। हुज़ेफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु, अरफजा रज़ियल्लाहु अन्हु और अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा कि आप सब हमारे पास आ जाएं। इसलिए जैसा कि वर्णन हुआ है वे सब इन दोनों के पास सुहार में जमा हो गए और अपने मतसला इलाक़े को मुर्तद होने वालों से पाक कर दिया यहां तक कि अपने क़ुरब-ओ-जवार में सब लोगों से सुलह हो गई। तथा इन उमरा ने लक़ीत के साथी सरदारों को पत्र लिखे। उन्होंने बनू जुदीद के रईस से इबतेदा की। इस के जवाब में सरदारों ने भी मुस्लमानों को पत्र लिखे। जैसा कि वर्णन हुआ है इस के नतीजा में सरदार लक़ीत से अलैहदा हो गए। इस के बाद लक़ीत के लश्कर के साथ मुस्लमानों की शदीद लड़ाई हुई और इस की तफ़सील पहले आ चुकी है। इस मार्के के बाद अकरम रज़ियल्लाहु अन्हु और हुज़ेफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु इस राय पर सहमत हुए कि हुज़ेफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु अमान में ही क़ियाम करें और

मुआमलात को सुलझाएं और लोगों को अमन दिलाएँ और हज़रत अकरमा हुज़ेफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हा मुस्लमानों की बड़ी फ़ौज के साथ दूसरे मुशरेकीन की सरकूबी के लिए आगे बढ़ गए। उन्होंने महरा से अपनी जंगी कार्रवाई की इबतिदा की।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 292 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

हज़रत अकरमा हुज़ेफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की महरा क़बीला की तरफ़ पेशक़दमी के बारे में आता है कि अमान के मुर्तद होने वालों की सरकूबी से फ़ारिग़ होने के बाद अकरमा हुज़ेफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने लश्कर के हमराह नजद के इलाक़े महरा क़बीला की तरफ़ रवाना हो गए। लिखा है कि उन्होंने अमान वालों और अमान के इर्द-गिर्द के लोगों से अपनी इस मुहिम के लिए मदद मांगी। वे चलते रहे यहां तक कि महरा क़बीले के इलाक़े में पहुंच गए। उनके साथ मुख़्तलिफ़ क़बायल के लोग थे यहां तक कि अकरमा ने महरा क़बीले और इसके मज़ाफ़ाती इलाक़ों पर चढ़ाई कर दी। उनके मुक़ाबला के लिए महरा के लोग दो गिरोहों में तक़सीम थे। एक गिरोह स्थान जीरूत में एक शख़्स शिख़ की सरकर्दगी में मोरचा ज़न था। दूसरा गिरोह नजद में बनू मेहारब के एक शख़्स मुसब्बह की सरकर्दगी में था। दरअसल समस्त महरा इसी लश्कर के सरदार के ताबे था सिवाए शिख़रीत और उस की जमईयत के। ये दोनों सरदार एक दूसरे के मुख़ालिफ़ थे और एक दूसरे को अपनी तरफ़ बुलाते थे और इन दोनों फ़ौजों में से हर एक यह चाहता था कि उनके सरदार को ही कामयाबी हासिल हो। यही वह बात थी जिसके ज़रीया से अल्लाह तआला ने मुस्लमानों की मदद की और उनको उनके दुश्मनों के ख़िलाफ़ मज़बूत किया और दुश्मनों को कमज़ोर कर दिया। जब अकरमा ने शिख़रीयत के हमराह थोड़ी संख्या में लोग देखे तो उन्होंने उसे इस्लाम की तरफ़ रुजू करने की दावत दी। ये पहले मुस्लमान था। उसे कहा कि दुबारा मुस्लमान हो जाओ और अब मुस्लमानों से जंग न करो। इसलिए इस इबतेदाई तहरीक पर ही शिख़रीत ने उनकी दावत को क़बूल कर लिया और इस तरह अल्लाह ने मुसब्बह को कमज़ोर कर दिया। फिर अकरमा ने मुसब्बह की तरफ़ पैग़ाम्बर भेजा और उसे इस्लाम की तरफ़ वापस आने और कुफ़्र से लौटने की दाअवत दी परन्तु उसके साथ लोगों की जो कसीर संख्या थी इस कसरत ने उस को धोखा दिया। शिख़रीयत के इस्लाम लाने की वजह से मुसब्बह और शिख़रीयत में दूरी मज़ीद बढ़ गई। बहरहाल अकरमा ने उस की तरफ़ पेशक़दमी की और शिख़रीयत भी आप रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ था। उन दोनों का नजद में मुसब्बह के साथ पर मुक़ाबला हुआ और उन्होंने यहां दबा से भी ज़्यादा शदीद जंग की। अल्लाह ने मुर्तद बागियों के लश्कर को शिकस्त दी और उनका सरदार मारा गया।

मुस्लमानों ने भागने वालों का पीछा किया और उनमें से बहुत सी संख्या को क़तल किया और बकसरत क़ैदी बनाए गए और माल-ए-ग़नीमत में दो हज़ार की संख्या में उम्दा नसल की ऊंटनियां भी मुस्लमानों के हाथ आईं।

हज़रत अकरम रज़ियल्लाहु अन्हु ने माल-ए-ग़नीमत को पाँच हिस्सों में तक़सीम किया और शिख़रीयत पांचवे के साथ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ रवाना कर दिया। बाक़ी चार हिस्से उन्होंने मुस्लमानों में बाँट दिए। इस तरह अकरमा का लश्कर सवारियों और माल-ओ-मता और साज़ो सामान की वजह से मज़ीद ताक़तवर हो गया। हज़रत अकरमा ने वहीं क़ियाम कर के इस इलाक़े के समस्त लोगों को जमा किया और उन सबने इस्लाम क़बूल कर लिया। हज़रत अकरमा ने इस फ़तह की ख़ुशख़बरी सायब नामी एक शख़्स के ज़रीया हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में पहुंचाई।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 292-293 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

फिर हज़रत अकरमा की यमन की तरफ़ पेशक़दमी का वर्णन है। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने ख़त में जिसका वर्णन पहले हो चुका है हज़रत अकरमा को हिदायत दी थी कि महरा के बाद यमन चले जाना और यमन और हज़र मौत की कार्यवाईयों में हज़रत मुहाजिर बिन अबू उम्मिया के साथ रहना और अमान और यमन के दरमयान जिन लोगों ने इर्तेदाद इख़तेयार किया है उनकी सरकूबी करना।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 291 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012ई.)

इसलिए हज़रत अकरमा ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के इस इरशाद की तकमील में महरा से निकल कर यमन की तरफ़ पेशक़दमी की यहां तक कि अबयन जा पहुंचे। अबयन भी यमन की एक बस्ती है। उनके साथ एक बहुत बड़ा लश्कर था जिसमें क़बीला महरा और दूसरे क़बायल के बहुत से लोग शामिल थे। हज़रत अकरमा ने अपना मुकम्मल क़ियाम जुनूबी यमन में ही रखा और वहां नखा और हीमैर के क़बायल की सरकूबी में व्यस्त रहे और शुमाली यमन की तरफ़ बढ़ने की नौबत ही नहीं आई।

हज़रत अकरमा ने क़बीला नखरा के प्रसिद्ध लोगों को पकड़ लेने के बाद इस क़बीले के लोगों को जमा किया और उनसे पूछा कि तुम लोगों की इस्लाम के बारे में क्या राय है? तो उन्होंने कहा कि जाहेलीयत के ज़माने में भी हम अहल-ए-मज़हब थे, मज़हब से हमें लगाओ था, हम अरब एक दूसरे पर चढ़ाई नहीं करते थे तो हमारा उस वक़्त क्या हाल होगा जब हम इस दीन में दाख़िल हो जाएं जिसकी फ़ज़ीलत से हम वाक़िफ़ हो चुके हैं और इस की मुहब्बत हमारे दिलों में दाख़िल हो चुकी है, अर्थात इस्लाम की मुहब्बत हमारे दिलों में अब दाख़िल हो चुकी है। हज़रत अकरमा ने जब उनके बारे में तहक़ीक़ात कीं कि दिल से यह कह रहे हैं या सिर्फ जान बचाने के लिए तो मालूम हुआ कि मामलात वैसा ही है जैसा कि उन्होंने बयान किया था। वह हक़ीक़त में सही बयान दे रहे थे। उनके अवाम बदस्तूर इस्लाम पर साबित-क़दम रहे जबकि उनके ख़वास में से जो मुर्तद हो गए थे वे भाग गए। इस तरह हज़रत अकरमा को इर्तिदाद के इल्ज़ाम से बरी क़रार दिया और वह उनको जमा करने के लिए वहीं मुक़ीम रहे।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 298 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

(हज़रत सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक पृष्ठ 233 मुद्रित बुक कॉर्नर शो-रूम जेहलम)

(मोअज्जमुल बुल्दान भाग 1 पृष्ठ 109)

अब मैं हज़रत अकरमा की इक़ामत से असवद अनसी की बाक़ीमांदा जमाअत पर गहरा असर पड़ा जिसकी क़ियादत केस बिन मश्कूह और अम्र बिन मअदी करिब रहे थे। सना से भागने के बाद केस सना के मध्य चक्कर काटता रहा और अम्र बिन मअदी करब, असवद अनसी की लेहज में मौजूद पार्टी में शामिल हुआ था लेकिन जब हज़रत अकरमा अब्यन पहुंचे तो दोनों अर्थात केस और अम्र बिन मअदी करब आपसे क़िताल के लिए इकट्ठे हो गए, जंग के लिए तैयार हो गए, लेकिन जल्द ही दोनों में मतभेद हुआ और एक दूसरे से जुदा हो गए। इस तरह हज़रत अकरमा के मशरिक़ की तरफ़ से आने ने लहज में मौजूद मुर्तद होने वालों की जमाअतों के अंत के लिए अहम किरदार अदा किया।

(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत और कारनामे अज़ सलाबी अनुवादक पृष्ठ 304 मुद्रित अल् फ़ुरकान मुज़फ़्फ़र गढ़)

यमन के साथ ही किनदा क़बीला आबाद था जो हज़र मौत के इलाक़े में था। इस इलाक़े के आमिल हज़रत ज़ियाद बिन लबीद रज़ियल्लाहु अन्हु थे। उन्होंने ज़कात के बारे में सख़्ती की तो उनके ख़िलाफ़ बग़ावत बरपा हो गई। इसलिए हज़रत अकरमा और हज़रत मुहाजिर बिन अबू उम्मिया रज़ियल्लाहु अन्हु दोनों उनकी मदद के लिए पहुंचे। इस की तफ़सील जो है वह हज़रत मुहाजिर बिन अबू उम्मिया रज़ियल्लाहु अन्हु के विषय में वर्णन हो जाएगी। बहरहाल जब हज़रत अकरमा ने मुर्तद होने वालों से मुहिम्मात के बाद मदीना लौटने की तैयारी शुरू कर दी तो उनके साथ नोमान बिन जोन की बेटी भी थी जिससे उन्होंने मैदान-ए-जंग में शादी कर ली थी। जबकि उन्हें इलम था कि इस से पहले उम्मे तमीम और मजाह की बेटी से शादी कर लेने के बायस हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु पर सख़्त नाराज़ हुए थे, उसका पहले तफ़सीली वर्णन पिछले ख़ुतबा में हो चुका है। लेकिन उन्होंने अर्थात हज़रत अकरमा इसके बावजूद इस से शादी कर ली। इस पर हज़रत अकरमा की फ़ौज के कई अफ़राद ने उनसे अलैहदगी इख़तेयार कर ली। यह मुआमला हज़रत मुहाजिर अबू उम्मिया रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने पेश किया गया परन्तु वे भी कोई फ़ैसला नहीं कर सके और ये तमाम हालात हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में लिख कर उनसे राय दरयाफ़्त की।

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने तहरीर फ़रमाया कि अकरमा ने शादी करके कोई नामुनासिब काम नहीं किया।

कुछ लोग जो नाराज़ थे उनकी बहरहाल तसल्ली हो गई। यह भी बयान किया जाता है कि कुछ लोग जो हज़रत अकरमा से नाराज़ हुए थे उनकी नाराज़गी का पस-ए-मंज़र यह था कि नोमान बिन जोन ने एक मर्तबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर दरख़ास्त की थी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस की बेटी को अपने विवाह में क़बूल फ़र्मा लें लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इंकार फ़र्मा दिया और उस की बेटी को उस के पिता

के साथ ही वापस रवाना कर दिया। चूँकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस लड़की को रद्द कर चुके थे इसलिए हज़रत अकरमा की फ़ौज के एक हिस्सा का ख़्याल था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उस्वा हसना पर अमल करते हुए हज़रत अकरमा को भी इस लड़की से शादी नहीं करनी चाहिए थी लेकिन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह दलील तस्लीम नहीं की। उन्होंने कहा यह बिल्कुल ग़लत है और हज़रत अकरमा की शादी को जायज़ क़रार दिया।

हज़रत अकरमा अपनी बीवी के हमराह मदीना वापस आ गए और लश्कर का वह हिस्सा भी जो उनसे ख़फ़ा हो कर अलैहदा हो गया था वह दुबारा उनसे आ मिला।

(हज़रत सय्यदना अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक पृष्ठ 242-243 शिरकत प्रिंटिंग प्रैस लाहौर)

अस्मा बिंत नोमान बिन जून, जिस लड़की का वर्णन है इस का मुख़्तसर परिचय यह है। हज़रत अकरमा ने जिस महिला से शादी की थी बुख़ारी और अन्य हदीस की पुस्तकों में इस की बाबत रिवायात वर्णितर हैं। इस महिला का निकाह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हुआ था जबकि रुख़्सती से पूर्व ही इस से ऐसी हरकत सरज़द हुई कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस ख़ातून को वापस उसके क़बीले में भिजवा दिया। उनके नाम समेत वाकेयात में बहुत इख़्तेलाफ़ भी हैं। कुछ ने उनकी शादी हज़रत मुहाजिर बिन अबी अमय से भी वर्णन की है। बहरहाल इस वाक़िया की तफ़सीलात का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान फ़रमाया है कि जब अरब फ़तह हुआ और इस्लाम फैलने लगा तो किनदा क़बीला की एक औरत जिसका नाम अस्माया उमीमा था और वह जोवेना या बिंत जोन भी कहलाती थी। इस का भाई लुक़्मान रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अपनी क़ौम की तरफ़ से बतौर वफ़द हाज़िर हुआ और इस अवसर पर उसने यह भी ख़ाहिश की कि अपनी बहन की शादी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कर दे और मिल कर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरख़ास्त भी कर दी कि मेरी बहन जो पहले एक रिश्तेदार से ब्याही हुई थी अब विधवा है, निहायत ख़ूबसूरत और लायक़ है, आप इस से शादी कर लें। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को चूँकि क़बायल-ए-अरब का इत्तिहाद मंज़ूर था आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस की यह दावत मंज़ूर कर ली और फ़रमाया साढ़े बारह औक़िया चांदी पर निकाह पढ़ दिया जाए। उसने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम सम्मानित लोग हैं महर थोड़ा है।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इस से ज़्यादा मैं ने अपनी किसी बीवी या लड़की का महर नहीं बाँधा।

जब उसने रजामंदी का इज़हार कर दिया तो निकाह पढ़ा गया और उसने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरख़ास्त की कि किसी आदमी को भेज कर अपनी बीवी मंगवा लीजीए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबू उसैद को इस काम पर निर्धरित किया। वह वहां तशरीफ़ ले गए। जोवेना ने उनको अपने घर बुलाया तो हज़रत अबू उसेद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बीवीयों पर हिजाब नाज़िल हो चुका है। इस पर उसने दूसरी हिदायात दरयाफ़्त कीं जो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने बता दीं और ऊंट पर बिठा कर मदीना ले आए और एक मकान में जिसके निकट ख़जूरों के दरख़्त भी थे ला कर उतारा। इस के साथ उस की दाया भी उस के रिश्तेदारों ने रवाना की थी। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि जिस तरह हमारे मुल्क में भी अमीर लोग जो हैं एक बे-तकल्लुफ़ नौकर साथ कर देते हैं ताकि उसे अर्थात लड़की को किसी किस्म की तकलीफ़ न हो। चूँकि यह औरत हुसैन मशहूर थी और यूं भी औरतों को दुल्हन देखने का शौक़ होता है, मदीना की औरतें उसको देखने गईं और इस औरत के बयान के मुताबिक़ किसी औरत ने इस को सिखा दिया कि रोब पहले दिन ही डाला जाता है। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तेरे पास आएं तो कह देना कि मैं आपसे अल्लाह की पनाह माँगती हूँ, इस पर वह तेरे ज़्यादा गरवीदा हो जाऐंगे। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि अगर यह बात उस औरत की बनाई हुई नहीं है यानी जिसकी शादी थी तो कुछ ताज्जुब नहीं कि इस तरह का फ़िक़रा कहलवाना। किसी मुनाफ़िक़ ने अपनी पत्नी या और किसी रिश्तेदार के ज़रीया यह शरारत की हो, ग़रज़ जब उस की आमद की इत्तिला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मिली तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस घर की तरफ़ तशरीफ़ ले गए जो उस के लिए निर्धरित किया गया था। अहादीस में लिखा है कि, इस का अनुवाद यह है कि जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस के पास तशरीफ़ लाए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस से फ़रमाया कि तू अपना नफ़्स मुझे भेंट कर दे। उसने जवाब दिया कि क्या मलिका भी अपने आपको आम आदमियों के सपुर्द किया करती है? नऊज़ो-बिल्लाह अपने आपको बड़ा ज़ाहिर किया। अबू उसैद रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि इस पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस ख़्याल से कि अजनबीयत की वजह से घबरा रही है उसे तसल्ली देने के लिए इस पर अपना हाथ रखा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपना हाथ अभी रखा ही था कि उसने यह निहायत ही गंदा और नामाक़ूल फ़िक़रा कह दिया कि मैं तुझसे अल्लाह तआला की पनाह माँगती हूँ। चूँकि नबी ख़ुदा तआला का नाम सुनकर अदब की रूह से भर जाता है और उस की अज़मत का मतवाला होता है। उस के इस वाक्य पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़ौरन फ़रमाया कि तू ने एक बड़ी हस्ती का वास्ता दिया है और उस की पनाह मांगी है जो बड़ा पनाह देने वाला है इसलिए मैं तेरी दरख़ास्त को क़बूल करता हूँ। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसी वक़्त बाहर तशरीफ़ ले आए और फ़रमाया कि हे अबू उसैद उसे दो चादरें दे दो और उस के घर वालों के पास पहुंचा दो। इसलिए इस के बाद उसे महर के हिस्सा के इलावा बतौर एहसान दो राज़की की चादरें देने का भी हुक्म दिया।

बड़ी अच्छी सफ़ैद लंबी सोती चादरें थीं ताकि क़ुरआन-ए-करीम का हुक्म وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ पूरा हो जो ऐसी औरतों के सम्बन्ध में है जिनको बिना सम्बन्ध तलाक़ दे दी जाए। और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे रुख़स्त कर दिया और अबू उसैद रज़ियल्लाहु अन्हो ही उस को उस के घर पहुंचा आए। उस के क़बीले के लोगों पर यह बात निहायत दुखदीन गुज़री और उन्होंने उस को मलामत की परन्तु वह यही जवाब देती रही कि यह मेरी बदबख़्ती है और कई दफ़ा उसने यह भी कहा कि मुझे वरग़लाया गया था और कहा गया था कि जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तेरे पास आएं तो तुम परे हट जाना और नफ़रत का इज़हार करना इस तरह उन पर तुम्हारा रोब क़ायम हो जाएगा। मालूम नहीं यही वजह हुई या कोई और, बहरहाल उसने नफ़रत का इज़हार किया और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस से अलैहदा हो गए और उसे रुख़स्त कर दिया।

(उद्धरित तफ़सीर कबीर भाग 2 पृष्ठ 533 से 535)

मैं एक सहाबी हज़रत उसैद रज़ियल्लाहु अन्हो के वर्णन में यह पहले भी वर्णन कर चुका हूँ। बहरहाल हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हो किन्दा, हज़र मौत से यमन और मक्का के रास्ते वापस हुए। जब आप रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना पहुंचे तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपको हुक्म दिया कि ख़ालिद बिन सईद की मदद के लिए रवाना हो जाएं। हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी फ़ौज को जिसने आपके साथ इर्तेदाद की जंगों में शिरकत की थी छुट्टी दे दी थी। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके बदले दूसरी फ़ौज तैयार की। इसलिए छुट्टी दे दी कि अब तुम लोग थक गए होगे, काफ़ी बड़ी मुहिम्मात कर के आए हो। बहरहाल हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने दूसरी फ़ौज तैयार की और उन्हें हुक्म दिया कि अकरमा के पर्चम तले शाम के लिए रवाना हो जाएं।

(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत और कारनामे अज़ सलाबी अनुवादक पृष्ठ 433 हाशिया मुद्रित मकतबा अल् फ़ुरकान मुज़फ़्फ़रगढ़)

वहां हज़रत अकरमा ने जो कारहाए नुमायां सरअंजाम दिए और बड़ी दिलेरी से लड़ते हुए जाम-ए-शहादत नोश फ़रमाया उसकी तफ़सील इं शा अल्लाह शाम की मुहिम्मात में वर्णन हो जाएगी।

फिर पांचवीं मुहिम जो थी हज़रत शुरहबील बिन हसना रज़ियल्लाहु अन्हो के मुर्तद बागियों के ख़िलाफ़ मुहिम थी। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हो को मुसेलमा की तरफ़ यमामा के इलाक़े में भेजा और उनके पीछे हज़रत शुरहबील हसना रज़ियल्लाहु अन्हो को भी यमामा की तरफ़ रवाना फ़रमाया। हज़रत शुरह बिन हसना रज़ियल्लाहु अन्हो का संक्षिप्त परिचय यह है कि हज़रत शुरहबील बिन हसना के पिता का नाम अब्दुल्लाह बिन मुताअ था और माता का नाम हसना था। कुछ लोगों उन्हें कुंदी और कुछ तमीमी कहते हैं। शुरहबील के पिता बचपन में ही फ़ौत हो गए थे और यह अपनी माता हसना के नाम पर शुरहबील हसना कहलाए। हज़रत शुरहबील इस्लाम लाने वालों में से थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने भाईयों के साथ हब्शा की तरफ़ हिज्रत की और जब हब्शा से वापस आए तो मदीना में आप रज़ियल्लाहु अन्हु बनू ज़ुरैक मकानों में क़ियाम पज़ीर हुए। ख़िलाफ़त राशिदा में यह मशहूर सिपहसालारों में से एक थे। अठारह हिज्री में सतासठ साल की आयु में ताऊन अमवास इस में वफ़ात पाई।

(उद्धरित ओसोदुल गाबा फ़ी मारेफ़तिल सहाबा भाग 2 पृष्ठ 619-620 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

बहरहाल जैसा कि वर्णन हो चुका है कि अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के हुक्म के बावजूद कि हज़रत शुरहबील रज़ियल्लाहु अन्हो के पहुंचने से पहले हमला नहीं करना, उन्होंने जल्दी की और हज़रत शुरहबील रज़ियल्लाहु अन्हो के आने से पहले ही मुसैलमा पर हमला कर दिया ताकि फ़तह का सेहरा उन्ही के सिर बंधे जबकि मुसैलमा ने उनको पीछे धकेल दिया और हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस नाकामी की इत्तिला जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को दी तो जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें तंबीही का ख़त लिखा और फ़रमाया कि यह शिकस्त का दाग़ लेकर मदीना नहीं आना कहीं लोगों में बददिली न फैल जाए और उन्हें अमान की तरफ़ जाने का हुक्म दिया। हज़रत शुरहबील बिन हसना रज़ियल्लाहु अन्हो अभी रास्ता में ही थे कि हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हो की शिकस्त की ख़बर उनको मौसूल हुई। उन्होंने पेशक़दमी बंद कर दी और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को नई हिदायात के लिए पत्र भेजा। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको लिखा कि तुम जहां हो वहीं ठहरे रहो।

(हज़रत अबू बकर के सरकारी ख़ुतूत अज़ ख़ुरशीद अहमद फ़ारुक़, किताब मेला मतबा जावेदबट प्रैस, पृष्ठ 43)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने शुरहबील को लिखा कि तुम यमामा के क़रीब ही मुक़ीम रहो यहां तक कि तुम्हें मेरा दूसरा हुक्म मौसूल हो और जिस शख़्स अर्थात मुसैलमा के मुक़ाबले के लिए तुमको भेजा है खुल कर उस का मुक़ाबला न करो।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 291 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

फिर जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को यमामा की मुहिम पर मामूर किया तो हज़रत शुरहबील बिन हसन रज़ियल्लाहु अन्हो को हुक्म दिया कि जब ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु तुम से आ मिलें और यमामा की मुहिम से तुम बख़ैर-ओ-ख़ूबी फ़ारिग़ हो जाओ तो क़बीला क़ुज़ाह का रुख करना और हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ हो कर क़ुज़ाह के उन बागियों की ख़बर लेना जो इस्लाम लाने से इंकार करें और उस की मुख़ालेफ़त पर कमरबस्ता हूँ। सिर्फ इंकार नहीं है बल्कि मुख़ालेफ़त भी है।

(हज़रत अबू बकर के सरकारी ख़ुतूत अज़ ख़ुरशीद अहमद फ़ारुक़, किताब मेला मतबा जावेदबट प्रैस, पृष्ठ 24)

क़ुज़ाह भी अरब का एक मशहूर क़बीला था जो मदीना से दस मंज़िल पर वादी अल्-कुरा से आगे मदायन सालिह के मग़रिब में आबाद था।

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 237 ज़व्वार एकेडेमी कराची)

बहरहाल हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के इरशाद के अनुसार हज़रत शुरहबील अपने लश्कर समेत रुके रहे जबकि मुसैलमा ने उन पर अपने लश्कर के साथ चढ़ाई कर दी।

इस का वर्णन करते हुए मुसन्निफ़ ने लिखा है कि अभी हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु यमामा के रास्ते ही में थे कि मुसैलमा की फ़ौज ने हज़रत शुरहबील की फ़ौज से लड़ाई की और उसे पीछे धकेल दिया। कुछ इतिहासकार यह लिखते हैं कि हज़रत शुरहबील ने भी वही ग़लती की जो इस से पूर्व उनके पेश-रौ हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हो कर चुके थे अर्थात मुसैलमा पर विजय का मुक़ाम ख़ुद हासिल करने के शौक़ में आगे बढ़े लेकिन उन्हें भी शिकस्त खा कर पीछे हटना पड़ा जबकि वाक़िया ऐसा नहीं है बल्कि ख़ुद यमामा के लश्कर ने इस ख़्याल से कि कहीं हज़रत शुरहबील हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु से मिलकर उन्हें नुक़्सान न पहुंचाएं आगे बढ़कर लश्कर पर हमला कर दिया और शिकस्त देकर उन्हें पीछे हटाने में कामयाब रहा। दोनों में से कोई बात हुई हो परन्तु वाक़िया यही है कि हज़रत शुरहबील अपने लश्कर लेकर पीछे हट गए। जब हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास पहुंचे और तमाम हालात-ओ-वाक़ियात का इलम हुआ तो उन्होंने हज़रत शुरहबील को सरज़निश की। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु का यह ख़्याल था कि अगर दुश्मन से टक्कर लेने की पूरी ताक़त न हो तो बेशक उस वक़्त तक उस के मुक़ाबले से गुरेज़ किया जाए जब तक कि मतलूबा ताक़त मयस्सर न हो जाए। बजाय इस के कि ताक़त न होने के बावजूद दुश्मन से जंग छेड़ी जाए और इस के नतीजा में शिकस्त खानी पड़े।

(हज़रत सय्यदना अबू बकरसिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक पृष्ठ 190 मुद्रित शिरकत प्रिंटिंग प्रैस लाहौर)

बहरहाल फिर बाद में हज़रत शुरहबील रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ जंग में शरीक रहे। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत शुरहबील रज़ियल्लाहु अन्हो को मुकदमतुल - जैश पर निगरान निर्धरित किया अर्थात फ़ौज का जो अगला हिस्सा था उस का निगरान उन्हें बनाया और मैमना और मयसरा दाएं और बाएं पर ज़ैद बिन ख़त्ताब और अबू हुज़ैफ़ा बिन अतबा बिन रबीया को निर्धरित फ़रमाया।

(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत और कारनामे अज़ डाक्टर अली मोहम्मद सलाबी अनुवादक पृष्ठ 355 मकतबा अल् फुरकान मुज़फ़्फ़रगढ़ पाकिस्तान)

यमामा की मुहिम से फ़ारिग़ होने के बाद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के इरशाद के मुताबिक़ हज़रत शुरहबील रज़ियल्लाहु अन्हो बनू क़ुज़ाह के बागियों की ख़बर लेने के लिए हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो से जा मिले।

इसलिए लिखा है कि हज़रत शुरहबील और हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो क़ुज़ाह के मुर्तद बागियों पर हमला करने लगे। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़बीला साअद और बलक पर चढ़ाई की और हज़रत शुरहबील रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़बीला कलब और उसके अधीन क़बायल पर चढ़ाई की।

(तारीख़ इब्ने खुल्दून भाग 2 पृष्ठ 440 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2016 ई.)

छटटी मुहिम जो है यह हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो की मुर्तद बागियों के ख़िलाफ़ मुहिम थी। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हुने एक झंडा हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो को दिया था और उनको तीन क़बायल क़ुज़ाह, विदया और हारिस के मुक़ाबले पर जाने का हुक्म दिया था।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 257 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

क़ुज़ा भी अरब का एक मशहूर क़बीला है जो मदीना से दस मंज़िल पर वादी अलकुरा से आगे मदायन सालेह के मग़रिब में आबाद है।

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 237 ज़व्वार अकैडमी कराची)

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो का भी मुख़्तसर परिचय यह है कि आपका नाम अम्र और उपनाम अब्दुल्लाह बिन अबू अबुल्लाह या कुछ के नज़दीक अबू मुहम्मद थी। आप रज़ियल्लाहु अन्हु के पिता का नाम आस बिन वायल, आपके पिता का नाम नाबिग़ा बिंत हरमिला था। एक रिवायत के मुताबिक़ आपकी माता का असल नाम सलमा था। नाबिग़ा उनका लक़ब था। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने आठ हिज्री में फ़तह मक्का से छः माह पहले इस्लाम क़बूल किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आठ हिज्री में आप रज़ियल्लाहु अन्हु को अमान का आमिल निर्धरित फ़रमाया और आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात तक इसी मन्सब पर रहे। इस के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हु शाम की फ़ुतूहात में शामिल हुए और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर-ए-ख़िलाफ़त में फ़लस्तीन के हाकिम रहे। उनके कारनामों में से एक नुमायां कारनामा मिस्र की फ़तह भी है। फ़तह मिस्र के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको मिस्र का हाकिम बना दिया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर ख़िलाफ़त में मिस्र की हुकूमत से माज़ूल हुए और फ़लस्तीन में गोशा-नशीनी इख़्तेयार की। अमीर मुआवीया ने आपको दुबारा मिस्र का हाकिम बनाया और देहांत तक आप इसी ख़िदमत पर निर्धारित रहे। कहा जाता है कि आपकी वफ़ात 43 हिज्री में हुई, कुछ के नज़दीक 47 हिज्री में हुई, कुछ 48 कहते हैं, कुछ 51 हिज्री में कहते हैं लेकिन 43 हिज्री में वफ़ात वाला कथन उमूमन दरुस्त तस्लीम किया जाता है।

(ओसोदुल गाबा भाग 4 पृष्ठ 232 से 234 दारुल क़ुतुब इम्लिया बेरूत 2016 ई.)

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो बड़े ख़ुशगुफ़तार और मीठी बात करने वाले प्रवक्ता थे। ज्ञानी थे, सियासतदान और सिपहसालार थे। रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अस्करी मुहिमों में उन पर भरोसा फ़रमाते थे। अम्र बिन आस, उनके बेटे अब्दुल्लाह और उम्मे अब्दुल्लाह पर मुश्तमिल ख़ानदान को बेहतरीन घराना क़रार दिया गया।

(एटलस सीरत नब्वी पृष्ठ 386 दारुस सलाम पाकिस्तान)

एक मुसन्निफ़ लिखता है कि हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो ग्यारह इल्म तैयार किराए थे उनमें से एक इल्म हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए भी था।

आपने उन्हें कुज़ाह के मुर्तद होने वालों से जंग करने का काम सपुर्द किया क्योंकि वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में भी जंग ज़ातुस सलासिल में क़बीला कुज़ाह से लड़ चुके थे और इस क़बीला के तमाम हालात और तमाम रास्तों से बख़ूबी वाक़िफ़ थे।

(फ़ातेह आज़म हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद फ़र्ज मिस्री अनुवादक पृष्ठ 109 मुद्रित नफ़ीस अकैडमी कराची)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अम्र बिन आस को ज़ुल हज्जा 8 हिज्री में उमान के दो सरदारों जैफ़र अब्बाद पिसरान के पास एक तब्लीग़ी ख़त देकर रवाना फ़रमाया था। यह सिफ़ारत निहायत कामयाब रही और अहले उमान हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ पर इस्लाम ले आए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इज़हार-ए-ख़ुशनुदी के तौर पर आपको अमान ही में ज़कात की वसूली के काम पर निर्धरित फ़र्मा दिया। आप रज़ियल्लाहु अन्हु अमान ही में मुक़ीम थे कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु को हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़त के ज़रीया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात की ख़बर मिली। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद अरब के बेशतर क़बायल मुर्तद हो गए। उनकी सरकूबी के लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अम्र बिन आस को अमान से तलब फ़रमाया तो आप हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के हुक्म की तामील में अमान से मदीना आ गए।

(उद्धरित सीरत हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ डाक्टर हस्न इबराहीम हस्न अनुवादक पृष्ठ 49 से 53 मुद्रित मकतबा जदीद लाहौर)

जब मुर्तद होने वालों का उपद्रव और बग़ावत के निवारण के लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ग्यारह प्रधान निर्धरित फ़रमाए थे तब हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत शरहबील बिन हसन रज़ियल्लाहु अन्हो को हुक्म दिया था कि जब यमामा की मुहिम से तुम बखेरो ख़ूबी फ़ारिग़ हो जाओ तो क़बीला कुज़ाह का रुख करना और हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ हो कर कुज़ाह के इन बाग़ीयों की ख़बर लेना जो इस्लाम लाने से इंकार करें और इस की मुख़ालेफ़त पर कमरबस्ता हो।

(हज़रत अबू बकर के सरकारी ख़ुतूत अज़ ख़ुरशीद अहमद फ़ारुक़, किताब मेला मतबा जावेद बट प्रैस पृष्ठ 43)

इसलिए हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत शुरहबील दोनों ने मिलकर बनू कुज़ाह के बाग़ीयों के ख़िलाफ़ कार्रवाई का आग़ाज़ कर दिया और उन पर छापे मारने लगे। इस की तफ़सील में एक लेखक लिखते हैं कि बनू क़ुज़ाह ख़ुशी से इस्लाम में दाख़िल नहीं हुए थे बल्कि अन्य क़बायल की तरह उन्होंने भी ख़ौफ़ के बायस या धन और शान की लालच में इस्लाम क़बूल किया था और उनके दिल इस्लाम की मुहब्बत से ख़ाली थे इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद जूंही उन्हें मुस्लमानों की कमज़ोरी का एहसास हुआ उन्होंने ज़कात देने से इंकार कर दिया। ख़िलाफ़त के दरबार में से हुक्म मिलते ही अम्र बिन आस अपने लश्कर के साथ इसी रस्ते से जुज़ाम की ओर रवाना हुए जिससे पहले गए थे। वहां पहुंच कर उन्होंने देखा कि बनू कुज़ाह जंग के लिए पूरी तरह तैयार हैं। मुक़ाबला शुरू हुआ घमसान का युद्ध हुआ। पहले की तरह अब भी कुज़ाह को पराजय उठानी पड़ी और हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो उनसे ज़कात लेकर और उन्हें दुबारा हल्क़ा-ब-गोश इस्लाम बना कर विजय होकर मदीना वापस आ गए।

(फ़ातेह आज़म हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद फ़र्ज मिस्री अनुवादक पृष्ठ 109 मुद्रित नफ़ीस अकैडमी कराची)

शेष जो मुहिम्मात हैं उनका वर्णन इंशा अल्लाह आगे होगा।

★ ★ ★

पृष्ठ 2 का शेष

ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु मेरा बहुत ज़्यादा ख़्याल रखते थे और हमसे हुस्न-ए-सुलूक करते थे। हमारा हक़ हमेशा याद रखते थे और हमारे बारे में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वसीयत का ख़्याल रखते थे। अबाद कहते हैं मैं ने कहा हे मेरी दादी यमामा की जंग में मुस्लमानों के ज़ख़मियों की संख्या बहुत ज़्यादा थी। उनसे सवाल पूछा। उन्होंने कहा हाँ हे मेरे बेटे। अल्लाह का दुश्मन मारा गया और मुस्लमान सब के सब ही ज़ख़मी थे। मैं ने अपने दोनों भाईयों को इस हाल में ज़ख़मी देखा कि उनमें ज़िंदगी की कोई रमक़ नहीं थी। लोग यमामा में पंद्रह रोज़ ठहरे। जंग ख़त्म हो चुकी थी और ज़ख़मों की वजह से अंसार और मुहाजिरीन में से बहुत थोड़ी संख्या हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ नमाज़ अदा करती थी। वह कहती हैं मैं जानती हूँ कि बनू तैय उस दिन अच्छी तरह आज़माऐ गए। मैं ने उस रोज़ अदी बिन हातिम को पुकारते हुए सुना, सब्र करो सब्र करो मेरे माँ बाप तुम पर क़ुर्बान। और मेरे बेटे ज़ैद ने उस रोज़ बड़ी बहादुरी से जंग की।

एक रिवायत में यह भी है कि हज़रत उम्मे अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु यमामा के रोज़ ज़ख़मी हुईं। तलवार और नेज़े के ग्यारह ज़ख़म उन्हें लगे इलावा इसके उनका एक हाथ कट गया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु उनका हाल दरयाफ़त करने तशरीफ़ लाते रहे। काब बिन अजर ने उस दिन सख़्त जंग की। उस दिन लोगों को सख़्त हज़ीमत उठानी पड़ी और लोग शिकस्त खा कर भागते हुए लश्कर के आख़िरी हिस्सा को भी पार कर गए। काब ने पुकारा। हे अंसार हे अंसार अल्लाह और रसूल की मदद को आओ और यह कहते हुए वह मुहिक्कम बिन तुफ़ैल तक पहुंच गए। मुहिक्कम ने उन पर मार लगाई और उनका बायां हाथ काट दिया। अल्लाह की क़सम! काब इसके बावजूद लड़खड़ाए नहीं और दाएं हाथ से ज़रब लगाते जबकि बाएं हाथ से ख़ून बह रहा था यहां तक कि वह बाग़ तक पहुंचे और इस में दाख़िल हो गए। हाज़िब बिन ज़ैद ने ओस को पुकारते हुए कहा कि हे अश्हल! तो साबित ने कहा कहो हे अंसार वे हमारा और तुम्हारा लश्कर हैं तो उन्होंने पुकारा हे अंसार हे अंसार यहां तक कि बनू हनीफा उन पर टूट पड़े। लोग मुंतशिर हो गए। आपने दो दुश्मनों को क़तल किया और ख़ुद भी शहीद हो गए। आपकी जगह उमेर बिन ओस ने ली। उन पर भी दुश्मनों ने हमला कर दिया और वह भी शहीद हो गए। फिर अबू अक़ील के बारे में है कि अबू अक़ील अंसार के हलीफ़ थे। आप यमामा के रोज़ सबसे पहले जंग के लिए निकले। आप को एक तीर लगा जो कंधे को चीरता हुआ दिल तक पहुंच गया आपने उस तीर को खींच कर बाहर निकाला। आप इस ज़ख़म से कमज़ोर हो गए। आपने माअन बिन अदी को कहते हुए सुना कि हे अंसार दुश्मन पर हमले के लिए लौटो। अबू अम्र कहते हैं कि अबू अक़ील अपने लोगों की तरफ़ जाने के लिए उठे मैं ने पूछा अबू अक़ील आपका क्या इरादा है? आप में जंग की अब हिम्मत नहीं है बहुत कमज़ोर हो गए हैं। उन्होंने जवाब दिया कि पुकारने वाले ने मेरा नाम पुकार कर आवाज़ लगाई है। मैं ने कहा उन्होंने तो केवल अंसार का नाम लिया है और उनकी मुराद ज़ख़मियों से नहीं थी। अबू अक़ील ने जवाब दिया कि मैं अंसार में से हूँ और मैं ज़रूर जवाब दूँगा ख़ाह दूसरे कमज़ोरी दिखाएंगे। इब्ने उमर कहते हैं कि

अबू अक़ील हिम्मत कर के उठे अपने दाएं हाथ में नंगी तलवार ली फिर पुकारने लगे हे अंसार यौम-ए-हनीन की तरह पलट कर हमला करो।

वे सब इकट्ठे हो गए और दुश्मन के सामने मुस्लमानों की ढाल बन गए यहां तक कि उन्होंने दुश्मन को बाग़ में धकेल दिया। वे आपस में मिल-जुल गए यानी अंदर जा के फिर घमसान की जंग हुई और तलवारें एक दूसरे पर पड़ने लगीं। मैं ने अबू अक़ील को देखा आपका ज़ख़मी हाथ कंधे से कट गया और आपका वह बाज़ू ज़मीन पर गिर पड़ा। आपको चौदह ज़ख़म आए इन सब ज़ख़मों की वजह से आप शहीद हो गए। इब्ने उम्र कहते हैं कि मैं अबू अक़ील के पास पहुंचा तो वह ज़मीन पर गिरे हुए आख़िरी साँसें ले रहे थे। मैं ने कहा हे अबू अक़ील तो उन्होंने लड़खड़ाती हुई ज़बान से कहा लब्बैक। फिर कहा किस को शिकस्त हुई? मैं ने बुलंद आवाज़ से कहा ख़ुशख़बरी अल्लाह का दुश्मन मुसैलमा मारा गया। उन्होंने अल्हम्दोलिल्लाह कहते हुए अपनी उंगली आसमान की तरफ़ उठाई और जान दे दी। इब्ने उमर कहते हैं कि मैं ने अपने वालिद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को उनका यह सारा वाक़िया बताया तो उन्होंने फ़रमाया अल्लाह उन पर रहम करे वह हमेशा शहादत की आरज़ू रखते थे और मेरे इलम के मुताबिक़ वह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चंद चुनीदा सहाबा में से थे और उनमें से क़दीमुल इस्लाम थे।

मुजाआ बिन मुरारा बनू हनीफा का सरदार था, उसका पहले वर्णन हो चुका है। उसने एक रोज़ माअन बिन अदी का वर्णन किया कि वह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में मेरे पास आया करते थे इस दोस्ती की वजह से जो मेरे और उस के दरमयान क़दीम से थी। मुजाआ कहते हैं कि जब वह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास यमामा की जंग के ख़त्म होने के बाद वफ़द में आए तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु एक रोज़ शुहदा की क़ब्रों की ज़यारत के लिए

अपने साथियों के साथ जा रहे थे। मैं भी उनके साथ निकला यहां तक कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और आप रज़ियल्लाहु अन्हु के साथी सत्तर सहाबा की क़ब्रों पर गए। मैं ने अर्ज़ किया हे ख़लीफ़ा रसूल मैं ने यमामा की जंग में शामिल होने वाले अस्हाब से ज़्यादा किसी को तलवारों के वारों के सामने साबित-क़दम रहने वाला नहीं देखा और न उनसे ज़्यादा शिद्दत से हमला करने वाला देखा है। मैं ने उनमें एक शख़्स को देखा। अल्लाह उन पर रहम करे। मेरी और उनकी दोस्ती थी। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया पहचान गए आप कि मान बिन अदी? मैं ने अर्ज़ किया हाँ और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु मेरी और उनकी दोस्ती को जानते थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया अल्लाह उन पर रहम करे तुम ने एक सालेह शख़्स का वर्णन किया है। मैं ने कहा हे ख़लीफ़ा रसूल गोया मैं अब भी चश्म-ए-तसव्वुर में उन्हें देख रहा हूँ और मैं ख़ालिद बिन वलीद के ख़ेमे में बंधा हुआ था। मुस्लमानों के क़दम उखड़ गए और इस शिद्दत से क़दम उखड़े कि मैं ने समझा कि अब उनके क़दम दुबारा जम नहीं सकेंगे और मुझे यह नागवार लगा। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया बख़ुदा

वास्तव में तुम्हें नागवार गुज़रा था? क्योंकि यह मुर्तद हो गए थे और इसी लिए क़ैद किया गया था। बहरहाल कहते हैं मैं ने कहा कि अल्लाह की क़सम मुझे यह नागवार गुज़रा। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि इस पर मैं अल्लाह की हमद करता हूँ।

मुज्जाआ कहते हैं मैं ने माअन बिन अदी को देखा वह सिर पर सुर्ख़ कपड़ा पहने हुए पलट कर हमला कर रहे थे। तलवार कंधे पर रखी हुई थी और इस से ख़ून टपक रहा था। वह पुकार रहे थे हे अंसार पूरी क़ुव्वत से हमला करो।

मुज्जाआ कहते हैं कि अंसार ने पलट कर हमला किया और इतना शदीद हमला था कि उन्होंने दुश्मन के क़दम उखाड़ दिए। मैं ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ चक्कर लगा रहा था। मैं बनू हनीफा के मक़्तूलीन को पहचानता था। मैं अंसार को भी देख रहा था वे शहीद हो कर गिरे हुए थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु यह सुनकर रो पड़े यहां तक कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु की पवित्र दाढ़ी आँसूओं से गीली हो गई।

अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब ज़ुहर का वक़्त आया तो मैं बाग़ में दाख़िल हुआ और शदीद जंग हो रही थी। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुअज़्ज़न को हुक्म दिया उसने बाग़ की दीवार पर ज़ुहर की अज़ान दी। लोग लड़ाई की वजह से व्याकुल थे यहां तक कि अस्र के बाद जंग ख़त्म हो गई तो हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हमें ज़ुहर और अस्र की नमाज़ पढ़ाई। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने पानी पिलाने वालों को मक़्तूलीन की तरफ़ रवाना किया। मैं उनके साथ चक्कर लगाने लगा। मैं अबू अक़ील के पास से गुज़रा उन्हें पंद्रह ज़ख़्म आए थे उन्होंने मुझसे पानी मांगा मैं ने उन्हें पानी पिलाया तो उनके तमाम ज़ख़्मों से पानी बह निकला और वह शहीद हो गए। मैं बिशर बिन अब्दुल्लाह के पास से गुज़रा। वह अपनी जगह पर बैठे हुए थे। उन्होंने मुझसे पानी मांगा। मैं ने उन्हें पानी पिलाया। वह भी शहीद हो गए।

महमूद बिन लबीद से रिवायत है कि जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अहले यमामा को क़तल किया तो मुस्लमान भी इस जंग में बड़ी संख्या में शहीद हुए यहां तक कि अक्सर सहाबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीद हो गए और मुस्लमानों में से जो ज़िंदा बच गए थे उनमें बहुत ज़्यादा ज़ख़मी थे।

(अल् इक्तेफ़ा भाग 2 हिस्सा 1 पृष्ठ 57 से 66 अलेमुल क़ुतुब बेरूत 1997 ई.)

(सैर अल् सहाबियात अज़ सईद अंसारी पृष्ठ 122 मुश्ताक़ बुक कॉर्नर लाहौर)

(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़सीत और कारनामे अज़ सलाबी पृष्ठ 349 फुर्क़ान ट्रस्ट ख़ान गढ़ पाकिस्तान)

जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो को मुसैलमा के क़तल की ख़बर दी गई तो वह मुजा को बेड़ियों में जकड़ कर साथ लाए ताकि मुसैलमा की शनाख़्त करवाईं। वह लाशों में उसे देखता रहा मगर वहां मुसैलमा नहीं मिला। फिर

वह बाग़ में दाख़िल हुआ तो एक छोटे कद, ज़र्द रंग, चपटी नाक वाले आदमी की लाश नज़र आई तो मुज्जा ने कहा यह मुसैलमा है जिस से तुम फ़राग़त हासिल कर चुके हो।

इस पर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा यह है वह आदमी जिसने तुम्हारे साथ यह सब कुछ किया है। मुजा जबकि क़ैद था, बनू हनीफा का नुमाइंदा था, सरदार था। इसलिए उनको बचाना भी चाहता था। मर्द तो अक्सर मर चुके थे लेकिन उसने एक चाल चली। बाक़ी जो लोग क़िला में बंद थे उनको बचाने के लिए उसने छल किया और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु से एक सुलह का अनुबंध किया। उसने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि ये लोग जो तुम्हारे मुक़ाबले में जंग के लिए निकले थे ये तो केवल जल्दबाज़ लोग थे जबकि क़िले तो अभी भी जंगजूओं से भरे हुए हैं। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा तुम पर हलाकत हो तुम यह क्या कह रहे हो? इस पर मुजा ने कहा बख़ुदा जो कह रहा हूँ बिल्कुल सच्च कह रहा हूँ। अतः आओ और मेरे पीछे मौजूद मेरी क़ौम की तरफ़ से मुझसे सुलह कर लो। धोखे से उसने ये बातें कीं बहरहाल आगे उस का वाज़िह भी हो जाएगा। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु इस होलनाक जंग में मुस्लमानों को जिस क़दर जानी नुक़्सान देख चुके थे उसके पेश-ए-नज़र उन्होंने यही मुनासिब समझा कि अब जबकि बनू हनीफा का सरदार और असल बाग़ी सरग़ना अपने साथियों के मारा जा चुका है तो अब मुस्लमानों का मज़ीद जानी नुक़्सान न ही करवाया जाए तो बेहतर है इसलिए हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने सुलह के लिए रजामंदी ज़ाहिर कर दी। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ से सुलह की ज़मानत लेकर मुजा ने कहा मैं उनके पास जाकर उनसे मश्वरा करता हूँ फिर वह उन लोगों के पास गया जबकि मुजा अच्छी तरह जानता था कि क़िलों में सिवाए औरतों बच्चों और इंतिहाई उम्र को पहुंचे हुए बूढ़ों और कमज़ोरों के कोई भी नहीं था। उसने उन्हें ज़िरहें पहनाईं और औरतों से कहा कि मेरी वापसी तक वह क़िले की दीवारों पर चढ़ जाएं। फिर वह हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया और कहा कि जिस शर्त पर मैं ने सुलह की थी वह उस को क़बूल नहीं करते। जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़िलों की तरफ़ देखा तो वे आदमियों से भरे हुए नज़र आए। ज़िरहें पहना के औरतें इत्यादि वहां बिठा आया था। इस जंग ने मुस्लमानों को भी नुक़्सान पहुंचाया था और लड़ाई बहुत लम्बी हो गई थी इसलिए मुस्लमान ये चाहते थे कि वह फ़तह हासिल कर के वापस चले जाएं क्योंकि उनको यह मालूम नहीं था कि आइन्दा क्या होने वाला है। इसलिए हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने निसबतन नरम शरायत पर, सोने, चांदी, असलाह और आधे क़ैदियों पर सुलह कर ली और यह भी कहा जाता है कि एक चौथाई पर सुलह की थी। जब क़िलों के दरवाज़े खोले गए तो उनमें सिवाए औरतों बच्चों और कमज़ोरों के कोई भी नहीं था। इस पर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुजा से कहा तेरा बुरा हो तू ने मुझे धोखा दिया है। मुजा ने कहा ये मेरी क़ौम के लोग हैं उनको बचाना मेरे लिए ज़रूरी था। इस के इलावा मैं और क्या कर सकता था। इस के बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़त हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को पहुंचा कि हर बालिग़ को क़तल कर दिया जाए लेकिन यह ख़त उस वक़्त पहुंचा कि जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु उन लोगों से सुलह कर चुके थे इसलिए उन्होंने अपने अह्द को पूरा किया और वादा नहीं तोड़ा।

(अल् कामिल फिल् तारीख़ लेइब्ने असीर भाग 2 पृष्ठ 222-223 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.)

उनकी जान की अमान दे दी थी इसलिए हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुस्लमानों की हालत और सुलह की वजह बताने के लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ एक पत्र भेजा जिसको पढ़ कर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु संतुष्ट और ख़ुश हो गए।

जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु सुलह के अनुबंध से फ़ारिग़ हुए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़िलों के मुताल्लिक़ हुक्म दिया इसलिए वहां आदमी निर्धरित

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

कर दिए गए। मुज्जाआ ने अल्लाह की क़सम खाई कि जिन चीज़ों पर सुलह हुई है उनमें से कोई भी चीज़ आप रज़ियल्लाहु अन्हु से छुपी नहीं रहेगी और जो भी किसी पोशीदा चीज़ को जानने वाला होगा उस की ख़बर ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु तक पहुंचाई जाएगी। फिर क़िले खोल दिए गए, बहुत ज़्यादा असलाह बरामद हुआ जिसे ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अलैहदा इकट्ठा कर लिया और उन क़िलों में से जो दीनार और दिरहम मिले उन्हें भी अलग जमा कर लिया गया और उनके कवच जमा किए गए। फिर क़ैदी बाहर निकाले गए और उनको दो हिस्सों में तक़सीम किया गया। फिर माल-ए-ग़नीमत की क़ुरआ अंदाज़ी की गई और कवच और बेड़ियों और सोने चांदी इत्यादि का वज़न किया गया और ख़ुमस अलग किया गया। ख़ुमस का चौथा हिस्सा लोगों में तक़सीम किया गया। घुड़सवारों के लिए दो हिस्से निर्धरित किए गए और घोड़े के मालिक के लिए एक हिस्सा निर्धरित किया गया और उन सब में से भी ख़ुमस अलग किया गया और यह सारा ख़ुमस हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में भिजवा दिया गया।

(अल् इक्तेफ़ा भाग 2 हिस्सा 1 पृष्ठ 70-71 आलेमुल क़ुतुब बेरूत 1997 ई.)

इस के बाद बनू हनीफा बैअत करने और मुसैलमा की नबुव्वत से सम्बन्ध विच्छेद का इज़हार करने के लिए जमा हुए।

ये तमाम लोग हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास लाए गए जहां उन्होंने बैअत की और अपने दुबारा इस्लाम लाने का ऐलान किया। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनका एक वफ़द हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में मदीना मुनव्वरा रवाना फ़रमाया। जब वे लोग हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास पहुंचे तो हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने बड़ा ताज्जुब का इज़हार किया कि आख़िर तुम लोग मुसैलमा के फंदे में फंस किस तरह गए और गुमराह हो गए? उन्होंने जवाब दिया कि हे ख़लीफ़ा रसूल हमारे समस्त हाल से आप रज़ियल्लाहु अन्हु अच्छी तरह आगाह हैं। मुसैलमा न अपने आपको फ़ायदा पहुंचा सका और न उस के रिश्तेदारों और क़ौम को इस से कोई फ़ायदा हासिल हो सका।

(हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु सिद्दीक़ अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल पृष्ठ 206)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की एक ख़ाब का वर्णन है। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को यमामा की तरफ़ रवाना फ़रमाया तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ाब में देखा था कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु के पास हजर बस्ती है इस की ख़जूरों में से खजूरें लाई गईं। आपने उनमें से एक खजूर खाई उसको आपने गुठली पाया जो खजूर की शक्ल में थी। बड़ी सख़्त थी खजूर नहीं थी बल्कि गुठली थी। कुछ देर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस को चबाया फिर उसको फेंक दिया। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस ख़ाब की ताबीर यह फ़रमाई, फ़रमाया कि ख़ालिद को अहल-ए-यमामा की तरफ़ से शदीद मुक़ाबले का सामना करना पड़ेगा और अल्लाह ज़रूर उसके हाथ पर फ़तह अता फ़रमाएगा।

(अल् इक्तेफ़ा भाग 2 हिस्सा 1 पृष्ठ 72 अलेमुल क़ुतुब बेरूत 1997 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु यमामा की तरफ़ से आने वाली ख़बरों का बशिद्दत इंतेज़ार फ़रमाते थे और जैसे ही ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ से कोई एलची आता तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु उनसे ख़बरें हासिल करते। एक रोज़ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु दोपहर के वक़्त गर्मी में निकले। आप रज़ियल्लाहु अन्हु सरार नामी मुक़ाम की तरफ़ जाना चाहते थे जो मदीना से तीन मील के फ़ासले पर था। आपके साथ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत सईद बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो, तलहा बिन अबैदुल्लाह ओ और मुहाजेरीन और अंसार का एक गिरोह था। आप रज़ियल्लाहु अन्हु अबू ख़ेसमा नज्जारी से मिले जिन्हें ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भेजा था। जब उन्हें हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा तो फ़रमाया हे अबू ख़ेसमा क्या ख़बर है? उन्होंने अर्ज़ किया कि हे ख़लीफ़ा रसूल अच्छी ख़बर है। अल्लाह ने हमें यमामा पर फ़तह अता फ़रमाई है।

रावी कहते हैं कि हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने सजदा किया। अबू ख़ेसमा ने कहा कि ख़ालिद का आप रज़ियल्लाहु अन्हु के नाम ख़त है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और आप रज़ियल्लाहु अन्हु के अस्हाब ने अल्लाह की प्रशंसा की फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया मुझे जंग के बारे में बताओ कि कैसा रहा? अबू ख़ेसमा आप रज़ियल्लाहु अन्हु को बताने लगे कि ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने क्या-क्या किया था और कैसे अपने साथियों की सफ़-आराई की थी और किस तरह मुस्लमानों को हज़ीमत पहुंची और कौन उनमें से शहीद हुए। हज़रत अबू बकर इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन पढ़ने लगे और उनके लिए रहम की दुआ करने लगे। अबू ख़ेसमा ने मज़ीद कहा हे ख़लीफ़ा रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम बदवी हैं। उन्होंने हमें शिकस्त दी और हमारे साथ वह किया जो हम अच्छा नहीं समझते थे। इस के बाद अल्लाह ने हमें उन पर फ़तह अता फ़रमाई। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया जो ख़ाब मैं ने देखी थी मैं उस को सख़्त नापसंद करता था और मेरे दिल में यह ख़्याल पैदा हुआ कि ख़ालिद को ज़रूर शदीद जंग का सामना करना पड़ेगा और काश ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन लोगों से सुलह न की होती और उनको तलवार की धार पर रखा होता। इन शुहदा के बाद अहल-ए-यमामा में से किसी के ज़िंदा रहने का क्या हक़ है। फ़रमाया कि ये लोग जो उस के साथी थे अपने इस मुसैलमा कज़्ज़ाब की वजह से क़ियामत तक आज़माईश में रहेंगे सिवाए इस के कि अल्लाह उन्हें बचा ले। इस के बाद अहले यमामा का वफ़द हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ।

(अल् इक्तेफ़ा भाग 2 हिस्सा 1 पृष्ठ 72-73 अलेमुल क़ुतुब बेरूत 1997 ई.)

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 172 ज़व्वार एकेडेमी कराची 2004 ई.)

मक़्तूलीन की संख्या के बारे में कहा जाता है कि इस जंग में क़तल होने वाले मुर्तद होने वालों की संख्या तक़रीबन दस हज़ार थी और एक रिवायत में इक्कीस हज़ार भी बयान हुई है जबकि पाँच सौ या छः सौ के क़रीब मुस्लमान शहीद हुए। कुछ रिवायात में यमामा की जंग में शहीद होने वाले मुस्लमानों की संख्या सात सौ, बारह सौ और सतरह सो भी बयान हुई है।

(अल् बिदाया वन्नाहाया भाग 3 हिस्सा 6 पृष्ठ 321दारुल क़ुतुब अलालमी बेरूत 2001ई.)

(فتوح البلدان لامام ابی الحسن احمد بن یحییٰ البلاذری पृष्ठ63 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2000 ई.)

एक रिवायत के मुताबिक़ इस जंग में शहीद होने वालों में सात सौ से ज़ायद हुफ़्फ़ाज़ क़ुरआन थे।

(उमदतुल क़ारी शरह सही बुख़ारी किताब फ़ज़ायलुल क़ुरआन बाब जमाअल्क़ुरआन। भाग 20 पृष्ठ 23 दारुल क़ुतुब इल्मिया 2001 ई.)

इन शुहदा में अकाबेरीन सहाबा और हफ़ाज़-ए-क़ुरआन भी शामिल थे जिनका मुक़ाम और दर्जा मुस्लमानों में बेहद बुलंद था। उनकी शहादत एक बहुत बड़ा सानिहा थी। लेकिन इन हुफ़्फ़ाज़ क़ुरआन की शहादत ही बाद में जमा क़ुरआन का बायस बनी।

इन शुहदा में कुछ मशहूर सहाबा के नाम ये थे। हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबू हुज़ैफ़ा बिन अतबा बिन रबीह रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत सालिम मौला अबू हुज़ेफा रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत ख़ालिद बिन उसेद रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत हकम बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हो , हज़रत तुफ़ैल बिन अमरूद वसी रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हो के भाई हज़रत सायब बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस बिन केस रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबअद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबअद बिन बशर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत मालिक बन ओस रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत सुराका बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत मुआद रज़ियल्लाहु अन्हो, ख़तीब रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत साबित बिन केस बिन शम्स रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उबैद रज़ियल्लाहु अन्हो, रईस मुनाफ़ैकीन अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल के मोमिन सादिक़ फ़र्ज़ंद हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत यज़ीद बिन साबित ख़ज़रजी रज़ियल्लाहु अन्हो।

(फ़ुतूहुल बुल्दान पृष्ठ 124 से 126 मुद्रित मो अस्सा मारूफ़ बेरूत 1987 ई.)

कुछ इतिहासकार के नज़दीक यमामा की जंग रबीउल अव्वल बारह हिज्री को हुई जबकि कुछ का कथन है कि यह ग्यारह हिज्री के आख़िर में हुई। इन दोनों कथनों की समानता इस तरह हो सकती है कि इस जंग का आग़ाज़ ग्यारह हिज्री में हुआ हो और इस का अंत बारह हिज्री में हुआ हो।

(अल् बिदाया वन्नाहाया भाग 3 हिस्सा 6 पृष्ठ 322 सन् 11 हिज्री दारुल क़ुतुब अलालमी बेरूत 2001 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि

"जिन लोगों ने दावा-ए-नुबूव्वत किया और जिन से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने जंग की वे सब के सब ऐसे थे जिन्हों ने इस्लामी हुकूमत से बग़ावत की थी और इस्लामी हुकूमत के ख़िलाफ़ का ऐलान जंग किया था।

मुसैलमा ने तो ख़ुद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को लिखा था कि मुझे हुक्म दिया गया है कि आधा मुल्क अरब का हमारे लिए है और आधा मुल्क क़ुरैश के लिए है और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद उसने हिज्र और यमामा में से उनके निर्धरित करदा रक्षक सुमामा बिन उसाल को निकाल दिया और ख़ुद इस इलाक़ा का प्रधान बन गया और उसने मुस्लमानों पर हमला कर दिया। इसी तरह मदीना के दो सहाबा हबीब बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो और अब्दुल्लाह बिन वह्ब को उसने क़ैद कर लिया और उनसे ज़ोर के साथ अपनी नबुव्वत मनवानी चाही। अब्दुल्लाह बिन

वह्ब ने तो डर कर उसकी बात मान ली किन्तु हबीब बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस की बात मानने से इंकार कर दिया। इस पर मुसैलमा ने इस का अंग अंग काट कर आग में जला दिया।

इसी तरह यमन में भी जो रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अफ़्सर निर्धरित थे उनमें से बाअज़ को क़ैद कर लिया और बाअज़ को सख़्त सज़ाएं दी गईं। इसी तरह तिबरी ने लिखा है कि असवद अनसी ने भी इलमे बग़ावत बुलंद किया था और रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से जो हुक्काम निर्धरित थे उनको उसने तंग किया था और उनसे ज़कात छीन लेने का हुक्म दिया था। फिर उसने सिना में रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निर्धरित करदा हाकिम शहर बिन बाज़ान पर हमला कर दिया था। बहुत से मुस्लमानों को क़तल किया, लूटमार की, गवर्नर को क़तल कर दिया और उस को क़तल कर देने के बाद उस की मुस्लमान बीवी से जबरन निकाह कर लिया। बनू नजरान ने भी बग़ावत की और वह भी अस्वद उनसी के साथ मिल गए और उन्होंने दो सहाबा अम्र बिन हज़म रज़ियल्लाहु अन्हु और ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु को इलाक़ा से निकाल दिया।

इन वाक़ियात से ज़ाहिर है कि नबुव्वत का दावा करने वालों का मुक़ाबला इस वजह से नहीं किया गया था कि वह रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत में से नबी होने के दावेदार थे और रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दीन की इशाअत के मुद्दई थे बल्कि सहाबा ने उनसे इस लिए जंग की थी कि वह शरीयत इस्लामिया को मंसूख़ कर के अपने क़ानून जारी करते थे और अपने अपने इलाक़ा की हुकूमत के दावेदार थे और केवल इलाक़ा की हुकूमत के दावेदार ही नहीं थे बल्कि उन्होंने सहाबा को क़तल किया।"

(मौलाना मौदूदी साहिब के रिसाला "क़ादियानी मसला" का जवाब, अनवारुल उलूम भाग 24 पृष्ठ 12 से 14)

इस्लामी मुल्कों पर चढ़ाईयां कीं, क़ायम शूदा हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत की और अपनी आज़ादी का ऐलान किया।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बयान फ़रमाते हैं कि "जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने रहलत फ़रमाई .. उस के बाद बादिया नशीन एराब मुर्तद हो गए। ऐसे नाज़ुक वक़्त की हालत को हज़रत आईशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा ने यूं ज़ाहिर फ़रमाया है कि पैग़ंबर ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इंतिक़ाल हो चुका है औरकुछ झूठे मुद्दई नबुव्वत के पैदा हो गए हैं और कुछ ने नमाज़ें छोड़ दीं और रंग बदल गया है। ऐसी हालत में और इस मुसीबत में मेरा बाप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़लीफ़ा और जांनशीन हुआ।

मेरे बाप पर ऐसे ऐसे दुख आए कि अगर पहाड़ों पर आते तो वे भी नष्ट हो जाते।

अब ग़ौर करो कि मुश्किलात के पहाड़ टूट पड़ने पर भी हिम्मत और हौसला को न छोड़ना यह किसी मामूली इन्सान का काम नहीं। यह इस्तिक़ामत सिदक़ ही को चाहती थी और सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने ही दिखाई। मुम्किन नहीं था कि कोई दूसरा इस ख़तरा को सँभाल सकता। समस्त सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु उस वक़्त मौजूद थे। किसी ने ना कहा कि मेरा हक़ है। वे देखते थे कि आग लग चुकी है। इस आग में कौन पड़े। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस हालत में हाथ बढ़ा कर आप रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ पर बैअत की और फिर सबने एक बाद एक बैअत कर ली। यह उनका सिदक़ ही था कि इस फ़ित्ना को अंत किया और उन मूज़ियों को हलाक किया। मुसैलमा के साथ एक लाख आदमी था और इस के मसायल इबाहत के मसाइल थे।"

इबाहत जो है किसी चीज़ का शरीयत में मुबाह यानी जायज़ या हलाल होना है (उर्दू शब्दकोश तारीख़ी उसूल पर ज़ेर लफ़्ज़ इबाहत)। लोग इसकी इबाहती बातों को देख देखकर इस में शामिल हो जाते थे। बहुत सारी ग़लत चीज़ों को भी वह जायज़ क़रार दिया करता था। पहले उसका बयान भी हो चुका है। बहरहाल फ़रमाया कि :

"लोग इबाहती बातों को देख देख क्रास के मज़हब में शामिल होते जाते थे लेकिन ख़ुदा तआला ने अपनी साथ होने का सबूत दिया और सारी मुश्किलात को आसान कर दिया।"

(मल्-फ़ूज़ात भाग 1, 378 - 379)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मज़ीद फ़रमाते हैं "अहल-ए-तहक़ीक़ से यह अमर मख़फ़ी नहीं है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त का वक़्त ख़ौफ़ और मसायब का वक़्त था इसलिए जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वफ़ात पाई तो इस्लाम और मुस्लमानों पर मसायब टूट पड़े। बहुत से मुनाफ़िक़ मुर्तद हो गए और मुर्तदों की ज़बानें दराज़ हो गईं और इफ़्तिरा प्रदाज़ों के एक गिरोह ने दावे नबुव्वत कर दिया और अक्सर बादिया नशीन उनके पास जमा हो गए यहां तक कि मुसैलमा कज़्ज़ाब के साथ एक लाख के क़रीब जाहिल और बदकिर्दार आदमी मिल गए और फ़ित्ने भड़क उठे और मसायब बढ़ गए और आफ़ात ने दूर-ओ-नज़दीक का अहाता कर लिया और मोमिनों पर एक शदीद ज़लज़ला तारी हो गया। इस वक़्त समस्त लोग आज़माऐ गए और ख़ौफ़नाक और हवासबाख़ता करने वाले हालात नमूदार हो गए और मोमिन ऐसे लाचार थे कि गोया उनके दिलों में आग के अँगारे दहकाए गए हों या वे छुरी से ज़िबह कर दीए गए हों। कभी तो वे ख़ैरुल बरिय्या (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की जुदाई की वजह से और गाहे इन फ़ित्नों के बायस जो जला कर भस्म कर देने वाली आग की सूरत में ज़ाहिर हुए थे रोते। अमन का संदेह तक न था। उपद्रव करने वाले गंद के ढेर पर अगे हुए सब्ज़े की तरह छा गए थे। मोमिनों का ख़ौफ़ और उनकी घबराहट बहुत बढ़ गई थी और दिल दहश्त और बेचैनी से लबरेज़ थे।

ऐसे (नाज़ुक) वक़्त में (हज़रत) अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु हाकिम-ए-वक़्त और (हज़रत) खातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़लीफ़ा बनाए गए। मुनाफ़िक़ों, काफ़िरों और मुर्तदों के जिन व्यवहारों और तौर तरीक़ों का आपने मुशाहिदा किया उनसे आप दुःख में डूब गए। आप इस तरह रोते जैसे सावन की झड़ी लगी हो और आपके आँसू चशमा रवां की तरह बहने लगते और आप (रज़ियल्लाहु अन्हु) अपने अल्लाह से इस्लाम और मुस्लमानों की ख़ैर की दुआ मांगते।

(हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मर्वी है। आप रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब मेरे वालिद ख़लीफ़ा बनाए गए और अल्लाह ने उन्हें इमारत तफ़वीज़ फ़रमाई तो ख़िलाफ़त के आग़ाज़ ही में आपने हर तरफ़ से फ़ित्नों को मोजज़िन और झूठे नबुव्वत का दावा करने वालों की सरगर्मीयों और मुनाफ़िक़ मुर्तदों की बग़ावत को देखा और आप पर इतने मसायब टूटे कि अगर वे पहाड़ों पर टूटते तो वे ध्वस्त हो जाते और फ़ौरन गिर कर रेज़ा रेज़ा हो जाते लेकिन आपको रसूलों जैसा सब्र अता किया गया। यहां तक कि अल्लाह की नुसरत आ पहुंची और झूठे नबी क़तल और मुर्तद हलाक कर दीए गए। फ़ित्ने दूर कर दीए गए और मसायब छट गए और मुआमले का फ़ैसला हो गया और ख़िलाफ़त का मुआमला मुस्तहकम हुआ और अल्लाह ने मोमिनों को आफ़त से बचा लिया और उनकी ख़ौफ़ की हालत को अमन में बदल दिया और उन के लिए उनके दीन को मज़बूती बख़्शी और एक जहान को हक़ पर क़ायम कर दिया और मुफसिदों के चेहरे काले कर दीए और अपना वादा पूरा किया और अपने बंदे (हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की नुसरत फ़रमाई और सरकश सरदारों और बुतों को तबाह और बर्बाद कर दिया और कुफ़्फ़ार के दिलों में ऐसा रोब डाल दिया कि वह ध्वस्त हो गए और (आख़िर उन्होंने रुजू कर के तौबा की और यही ख़ुदा ए क़ह्हार का वादा था और वे सब सादिक़ों से बढ़कर सादिक़ है। अतः ग़ौर कर कि किस तरह ख़िलाफ़त का वादा अपने पूरे लवाज़मात और अलामात के साथ (हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ात में पूरा हुआ।"

(सिर्रुल खिलाफ़ा उर्दू अनुवाद पृष्ठ 47 से 50 मुद्रित नज़ारत इशाअत रब्वाह)

फिर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में बयान हुआ है कि हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु यमामा की मुहिम से फ़ारिग़ हो कर अभी वहीं ठहरे हुए थे कि हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको लिखा कि इराक़ की तरफ़ रवाना हो जाएं।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 307 मुद्रित दारुल कुतुव इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

एक रिवायत में आता है कि हज़रत ला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से कुमक मांगी। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ालिद बिन वलीद को लिखा और यह हुक्म दिया कि यमामा से इला के पास जल्दी से रवाना हो जाओ और उनकी मदद करो और वे उनकी मदद के पास पहुंचे। हुतम को क़तल किया फिर उनके साथ मिलकर ख़ुत् का घेराव किया। ख़ुत् भी बेहरीन में क़बीला अब्दलु कैस का मुहल्ला है जहां कसरत से खजूरें होती थीं। इस के बाद हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें इराक़ की तरफ़ कूच का हुक्म दिया और उन्होंने बेहरीन से उधर कूच किया।

फ़ुतूह बुल्दान अज़ बिलाज़री अनुवादक पृष्ठ 135 मुद्रित नफ़ीस अकैडमी कराची)

(मोअज्जमुल बुल्दान भाग 2 पृष्ठ 433)

मुज्जा बिन मुरारा की बेटी से हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु की शादी के बारे में जो सवाल उठते हैं इस बारे में कुतुब तारीख़ और जीवनी में लिखा है कि यमामा की जंग के ख़त्म होने और बनू हनीफा के बाक़ीमांदा बच जाने वालों के साथ सुलह का मुआहिदा हो जाने के बाद हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु की एक शादी हुई थी उस का वर्णन मिलता है। इतिहासकारों के अनुसार हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को जब इस शादी की ख़बर मिली तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु से नाराज़ हुए लेकिन जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने तफ़सीली वज़ाहत बज़रीया पत्र प्रस्तुत की तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की सारी नाराज़गी जाती रही। इस की तफ़सीलात के मुताबिक़ सुलह हो जाने के बाद ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुज्जा से मुतालिबा किया कि वह अपनी बेटी की शादी आप रज़ियल्लाहु अन्हु से कर दे। मुज्जा को मालिक बन नोवैरा

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 21 July 2022 Issue No.29

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

बीवी लैला उम्मे तमीम का वाक़िया और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु से शादी की नाराज़गी का इलम था इसलिए उसने कहा कि रुक जाएँ। आप मेरी कमर तोड़ देने का बायस बनेंगे और ख़ुद भी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के इताब से बच न सकेंगे लेकिन हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा तू अपनी बेटी की शादी मुझसे कर दे इसलिए उसने अपनी बेटी की शादी आपसे कर दी। अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु यमामा की ख़बरों के बराबर मुंतज़िर रहते थे और आपको ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़बर रसां का इंतिज़ार रहता था। एक रोज़ आप शाम के वक़्त मुहाजेरीन और अंसार की एक जमाअत के साथ एक मुक़ाम पर थे कि वहां ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़िरिस्तादा अबू ख़ेसमा रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात हो गई जबकि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें देखा तो उनसे दरयाफ़त किया पीछे क्या ख़बरें हैं? उन्होंने अर्ज़ किया कि ख़ैर है हे ख़लीफ़ा रसूलुल्लाह अल्लाह तआला ने हमें यमामा पर फ़त्हा नसीब फ़रमाई है और लीजीए यह ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़त है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़ौरन सजदा शुक्र बजा लाया और फ़रमाया मुझसे मार्के की कैफ़ीयत बयान करो कैसे हुआ। इस हवाले से एक पहले भी रिवायत गुज़र चुकी है। बहरहाल अबू ख़ेसमा ने मार्का की तफ़सील वर्णन करते हुए बताया कि ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने क्या-क्या ,किस तरह फ़ौज की सफ़ बंदी की, कौन कौन से सहाबा शहीद हुए और किस तरह हमें दुश्मन की पसपाई का सामना करना पड़ा और उन्होंने हमें ऐसी चीज़ों का आदी बना दिया जिसे हम अच्छी तरह नहीं जानते थे।

फिर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु की शादी का भी वर्णन हुआ। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हुने उन्हें ख़त लिखा कि हे उम्मे ख़ालिद के बेटे तुम्हें औरतों से शादी की सूझी है और अभी तुम्हारे सेहन में एक हज़ार दो सौ मुस्लमानों का ख़ून ख़ुशक नहीं हुआ और फिर मुज्जा ने तुम्हें फ़रेब देकर मुसालेहत कर ली हालाँकि अल्लाह तआला ने तुम्हें उन पर मुकम्मल क़ुदरत अता कर दी थी। मुज्जा से मुसालहत और इस की बेटी से शादी की वजह से ख़लीफ़ा रसूल अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ से यह दंड ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को पहुंचा तो आपने जवाबी ख़त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में रवाना किया जिसमें अपने मत की वज़ाहत और उस के दिफ़ा में लिखा। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखा कि इसके बाद दीन की क़सम, मैं ने उस वक़्त तक शादी नहीं की जब तक ख़ुशी मुकम्मल न हो गई और इस्तक़रार हासिल न हो गया। मैं ने ऐसे शख़्स की बेटी से शादी की है कि अगर मैं मदीना से पैग़ाम भेजता तो वह इंकार न करता। माफ़ कीजीए, मैं ने अपने मुक़ाम से पैग़ाम देने को तर्जीह दी। अगर आपको यह रिश्ता दीनी या दुनियावी एतबार से नापसंद हो तो मैं आपकी मर्ज़ी पूरी करने के लिए तैयार हूँ। रहा मसला मुस्लिम मक़्तूलीन की ताज़ियत का तो अगर किसी का हज़न और ग़म किसी ज़िंदा को बाक़ी रख सकता या मुर्दा को लौटा सकता तो मेरा हज़न और ग़म ज़िंदा को बाक़ी रखता और मुर्दा को लौटा देता। मैं ने इस तरह हमला किया कि ज़िंदगी से मायूस हो गया और मौत का यक़ीन हो गया और रहा मसला मुज्जा की फ़रेबदेही का तो मैं ने अपनी राय में ग़लती नहीं की लेकिन मुझे परोक्ष का ज्ञान नहीं है। जो कुछ किया अल्लाह ने मुस्लमानों के हक़ में ख़ैर किया है। उन्हें ज़मीन का वारिस बनाया और अंजाम-कार मुत्तक़ियों के लिए है। जब यह ख़त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को मौसूल हुआ तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु का ग़ुस्सा जाता रहा और क़ुरैश की एक जमाअत ने और जो हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़त लेकर आया था उसने भी हज़रत ख़ालिद की तरफ़ से बहाने किए तो हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया तुम सच्च कह रहे हो और हज़रत ख़ालिद की वज़ाहत और माज़रत क़बूल फ़रमाए।

(अल् इक्तेफ़ा भाग 2 हिस्सा 1 पृष्ठ 69-70 अलेमुल क़ुतुब बेरूत 1997 ई.)

(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु। डॉक्टर अली मोहम्मद सलाबी,उर्दू अनुवाद पृष्ठ 367- 368)

बाक़ी इंशा-ए-अल्लाह आइन्दा वर्णन होगा। मुर्तद होने वालों का एक क़िस्सा तो ख़त्म हो गया। ★ ★ ★

पृष्ठ 01 का शेष

मुर्तद क़रार दे दिया जाता है।

ऐसे वक़्त में केवल एक नबी ही काम आ सकता है और उन बातों का ईलाज कर सकता है। जब वह ज़ाहिर होता है तो वह जाहिल जो अपने आपको आलिम कहते थे उसकी पहचान से वंचित रह जाते हैं और वे ज्ञानी जो जाहिल के नाम से मशहूर थे अपनी बसीरत और पाकीज़ा फ़ित्रत की मदद से उस पर ईमान ले आते हैं। तब फ़रिश्तों और शैतान की लड़ाई शुरू होजाती है और वे जो नाक़ाबिल समझे जाते थे क़ाबिलीयत के नाम पर बनीनौ इन्सान को ग़ुलाम बना कर रखने वालों की एक-एक तदबीर को इस-इस तरह कुचल डालते हैं कि जैसे चील मुर्दार की बोटियों को पत्थरों पर मारती है और उन स्वयं निर्मित सक्षम की क़ाबिलीयत का रहस्य खुल जाता है और मुद्दतों से दबे हुए अवाम को फिर उभरने का अवसर मिलता है और इन्सानियत फिर आज़ादी की सांस लेती है। यही मज़मून है जिसे इस आयत में बयान किया गया और बताया गया है कि जिसके क़बज़ा में ख़ुदा तआला की नेअमत आ जाए वह उन्हें जिन्हें उसने ग़ुलाम बनाकर रखा है, कभी अपने हिस्सा में बराबर का शरीक नहीं बनाता। भला कभी भी बनीनौ इन्सान को ऐसे लोगों ने आज़ाद ए राय और आज़ाद ए अमल दी है। अगर नहीं तो फिर नबियों के सिवा जो समय समय पर आकर दुनिया को आज़ादी बख़्शें और कौन सी सूरत इन्सान की तरक़्क़ी की रह जाती है? इस दलील में नबुव्वत की अमली ज़रूरत को साबित किया गया है और यह ऐसी ज़बरदस्त दलील है कि हर साहिब बसीरत उसे देखकर यह कहे बग़ैर नहीं रह सकता कि नबुव्वत के बग़ैर कभी भी दुनिया अपने हुक़ूक़ को बरक़रार नहीं रख सकती। यह नेअमत जब तक दुनिया को बार-बार न मिले इन्सान का क़दम तरक़्क़ी की तरफ़ नहीं बढ़ सकता।

اَفَبِنِعۡمَةِ اللّٰهِ يَجۡحَدُوۡنَ लोगों को दोष दिया है कि तुम्हारी ही आज़ादी के लिए यह रसूल आया है और तुम इस नेअमत की नाक़द्री करते हुए उन्ही ज़ालिमों के साथ मिलकर काम कर रहे हो जो तुम्हारे हुक़ूक़ पर नाजायज़ तौर पर क़ाबिज़ हो रहे हैं।

(तफ़सीर ए कबीर, भाग 4, पृष्ठ 198 मुद्रित 2010 क़ादियान)

★ ★ ★

اب دیکھئے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad